बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल...

शेखावाटी मिशन-100

हिन्दी साहित्य

कक्षा – 12

कार्यालय : संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)
प्रभारी : शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

: missionshekhawati100@gmail.com | 9413361111, 9828336296

टीम शेखावाटी मिशन-100

घनश्यामदत्त जाट
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
झुन्झुनू-सीकर (राज.)

रमेशचन्द्र पूनियां
जिला शिक्षा अधिकारी
चूरू (राज.)

लालचन्द नहलिया
जिला शिक्षा अधिकारी मा.
सीकर (राज.)

अमर सिंह पचार
जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
झुन्झुनू (राज.)

रिछपाल सिंह मील
अति. जिला परि. समन्वयक
समग्र शिक्षा, सीकर (राज.)

महेन्द्र सिंह बड़सरा
सहायक निदेशक
कार्यालय संयुक्त निदेशक, चूरू

हरदयाल सिंह फगेड़िया
प्रभारी शेखावाटी मिशन-100
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
सीकर (राज.)

रामचन्द्र सिंह बगड़िया
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
सीकर (राज.)

नीरज सिहाग
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
झुन्झुनू (राज.)

सांवरमल गहनोलिया
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
चूरू (राज.)

महेश सेवदा
संयोजक शेखावाटी मिशन-100
सीकर (राज.)

रामावतार भदाला
सहसंयोजक शेखावाटी मिशन-100
सीकर (राज.)

तकनीकी सहयोग

राजीव कुमार, निजी सहायक | पवन ढाका, कनिष्ठ सहायक | महेन्द्र सिंह कोक, सहा. प्रशा. अधिकारी | अभिषेक चौधरी, कनिष्ठ सहायक

जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय), सीकर

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

माननीय शिक्षा मंत्री की कलम से.....

!! शुभकामना संदेश !!

सम्मानित शिक्षक साथियों,

हम सभी के लिए यह गौरव का विषय है कि राजस्थान शिक्षा के क्षेत्र में नित नये आयाम छू रहा है। नीति आयोग के नेशनल अचीवमेंट सर्वे (NAS) 2020 में राजस्थान सम्पूर्ण भारत में तीसरे स्थान पर रहा है। इस वर्ष राजस्थान, इंस्पायर अवार्ड मानक योजना में 8027 बाल वैज्ञानिकों के चयन के साथ पूरे देश में प्रथम स्थान पर रहा हैं। इसी परम्परा व सोच को निरन्तर बनाए रखने के प्रयास में इस वर्ष शेखावाटी मिशन–100 का क्रियान्वयन संयुक्त निदेशक परिक्षेत्र चूरु के अधीन जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा सीकर द्वारा किया जा रहा है। अनुभवी तथा ऊर्जावान विषय विशेषज्ञों की लगन व अथक मेहनत से माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा जारी संशोधित पाठ्यक्रम व मॉडल पेपर के आधार पर विषयवस्तु व मॉडल पेपर तैयार किये गये हैं, जिनको बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन के लिए विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा रहा है।

मैं इस मिशन प्रभारी सहित सभी विषयाध्यापकों की कर्मठ टीम को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने अपनी समर्पित कार्यशैली से इस नवाचारी कार्य को अंजाम दिया है। मेरा सभी संस्थाप्रधानों से आग्रह है कि वे सभी विषयाध्यापकों से समन्वय कर इस परीक्षोपयोगी सामग्री को विद्यार्थियों तक पहुँचाना सुनिश्चित करें।

मैं आशा करता हूँ कि आपका प्रयास पूरे प्रदेश के विद्यार्थियों के लिए एक नवाचार साबित होगा एवं उनके लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित।

3/3/21

गोविन्द सिंह डोटासरा
शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
राजस्थान सरकार, जयपुर

निदेशक महोदय की कलम से.....

!! शुभकामना संदेश !!

सम्मानित शिक्षक साथियों,

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरु संभाग, चूरु के नेतृत्व में 'शेखावाटी मिशन–100' के तहत माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक परीक्षा 2021 में शामिल होने वाले विद्यार्थियों हेतु बोर्ड परीक्षा में उपयोगी विषयवस्तु एवं प्रश्नकोश तैयार किया जा रहा है हालांकि यह सत्र कोविड–19 के कारण प्रभावित रहा है इसमें विद्यार्थियों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा।

'शेखावाटी मिशन–100' की टीम ने विद्यार्थियों के हित को देखते हुए संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार नवाचार करने का प्रयास किया। विद्यार्थियों के लिए जो विषयवस्तु व प्रश्नकोश निर्माण किया है आशा करते है कि यह विद्यार्थियों के लिए निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करने में लाभदायक सिद्ध होगा।

प्रतिभाशाली और कर्मठ ऊर्जावान शेखावाटी मिशन–100 की टीम को मेरी ओर से हार्दिक बधाई और उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित।

सौरभ स्वामी (IAS)
निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर

संयुक्त निदेशक की कलम से.....

!! शुभकामना संदेश !!

सम्मानित शिक्षक साथियों,

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षा परिणाम में मात्रात्मक एवं गुणात्मक अभिवृद्धि हेतु एक शैक्षिक नवाचार के रूप में 2017—18 में शेखावाटी मिशन—100 शुरु किया गया था। इस वर्ष शेखावाटी मिशन—100 की जिम्मेदारी संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा चूरु संभाग के नेतृत्व में जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक सीकर को मिली है। इस नवाचारी पहल ने पिछले 03 वर्षो में चूरु संभाग में बोर्ड परीक्षा परिणाम में सफलता के नये आयाम बनाये हैं।

पिछले वर्षो में मिली इस अभूतपूर्व सफलता से अभिप्रेरित होकर इस वर्ष शेखावाटी मिशन—100 का दायरा बढ़ाकर 17 विषयों तक किया गया है। इस वर्ष कक्षा—10 के 07 विषयों (संस्कृत व उर्दू सहित) तथा कक्षा 12 में 10 विषयों, जिनमें अनिवार्य हिन्दी व अंग्रेजी के अलावा विज्ञान संकाय में 04 विषयों (भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान व गणित) तथा कला संकाय में 04 विषयों (हिन्दी, साहित्य, राजनीति विज्ञान, इतिहास व भूगोल) के लिए बोर्ड द्वारा संशोधित पाठ्यक्रम व मॉडल पेपर के आधार पर अध्ययन सामग्री व मॉडल पेपर तैयार किये गये हैं। पाठ्य विषय वस्तु को इस प्रकार तैयार किया गया है कि सभी तरह के बौद्धिक स्तर वाले विद्यार्थी कम समय में भी अधिकतम अंक अर्जित कर सकेंगे।

शेखावाटी मिशन—100 में उन विषय विशेषज्ञों का चयन किया गया है जिनके पिछले वर्षो में अपने विषयों के गुणात्मक रूप से शानदार परीक्षा परिणाम रहे हैं।

मैं इस मिशन को सफल बनाने में सहयोग के लिए संभाग के सभी शिक्षा अधिकारियों एवं विषय विशेषज्ञों का तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

लालचन्द बलाई
संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू

शेखावाटी मिशन-100

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्यक्रम सत्र : 2020-21
उच्च माध्यमिक परीक्षा - 2021

विषय : हिन्दी साहित्य

सर्वश्रेष्ठ सफलता सुनिश्चित करने हेतु सर्वश्रेष्ठ संकलन

हरदयाल सिंह फगेड़िया
प्रभारी शेखावाटी मिशन-100
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
सीकर (राज.)

केशर काछवाल
संयोजक हिन्दी साहित्य
रा.उ.मा.वि., रूल्याणा माली (सीकर)
मो. : 7665246263

राकेश कुमार
सहसंयोजक हिन्दी साहित्य
रा.बा.उ.मा.वि., गुढ़ा गौड़जी (झुन्झुनू)

विकास शर्मा
रा.उ.मा.वि., जुराठड़ा (सीकर)

राजीव कुमार
निजी सहायक,
जिला शिक्षा अधिकारी (मा.), सीकर

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

संदेश

प्रिय विद्यार्थियों !

इस सत्र में बोर्ड परीक्षाएं 6 मई 2021 से आयोजित होने वाली हैं। बोर्ड परीक्षा परिणाम विद्यार्थी के भविष्य की दशा एवं दिशा निर्धारित करता है। इसलिए विद्यार्थी व अभिभावक का तनावग्रस्त होना स्वाभाविक है और यह चिन्ता इस वर्ष कोविड–19 महामारी ने और बढ़ा दी। प्रत्येक विद्यार्थी परीक्षा में अच्छे अंक लाने हेतु अपनी तरफ से वर्षभर कक्षा शिक्षण, गृहकार्य व नोट्स तैयार कर तैयारी करता है परंतु गत वर्ष से कोविड–19 जैसी वैश्विक महामारी के चलते कक्षा शिक्षण कार्य अत्यधिक प्रभावित हुआ है। परीक्षा से पूर्व का समय बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। इस महामारी एवं अध्यापन कार्य के प्रभावित होने के कारण माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर ने विद्यार्थी हित को देखते हुए लगभग 50 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किया है जो कि अधिकतम अंक प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी के पास सर्वोत्तम सुअवसर है।

अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए एक रणनीति बनाकर तैयारी करना आवश्यक होता है। शेखावाटी मिशन–100 हिंदी की टीम द्वारा कम समय में यह पाठ्य सामग्री तैयार की गई है। हमें विश्वास है कि निश्चित रूप से इस पाठ्य सामग्री को पढ़कर आपको सफलता मिलेगी। बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक व गुणात्मक सुधार के लिए यह एक प्रयास है। प्रस्तुत पाठ्य सामग्री में परीक्षा की तैयारी हेतु उपयोगी जानकारी व महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर प्रस्तुत किए गए हैं। हमारा सुझाव है कि आप इस पाठ्य सामग्री को मन लगाकर पढ़ें और अपनी परीक्षा की रणनीति तैयार करें। फिलहाल स्वाध्याय के लिए यह मौसम अनुकूल समय है। आप इसका सदुपयोग करें। देखने में आता है कि अधिकतर विद्यार्थी हिंदी विषय के प्रति गंभीर नहीं होते। अतः अन्य विषयों में विशेष योग्यता अर्जित करने के बावजूद भी हिंदी में अच्छे अंक प्राप्त नहीं कर पाते हैं। अतः सरल विषय मानकर हिंदी विषय की उपेक्षा न करें।

शुभकामनाओं सहित।

शेखावाटी मिशन – 100 (2020–2021)

हिन्दी साहित्य

कक्षा – 12

केशर देव काछवाल (व्याख्याता)

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रूल्याणा माली (सीकर)

राकेश कुमार (व्याख्याता)

श्रीमती मणीदेवी मोदी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

गुढ़ागौड़जी (झुन्झुनू)

विकास शर्मा (व्याख्याता)

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जुराठड़ा (सीकर)

काव्यांग परिचय

प्रश्न 1 काव्य गुण किसे कहते है ? काव्य गुणों के भेद बताइए।

उत्तर :— काव्य गुण : काव्य में रस का उत्कर्ष करने वाली बातों को काव्य गुण कहते है।

काव्य गुणों के तीन प्रकार है :—

(1) प्रसाद (2) ओज (3) माधुर्य

प्रश्न 2 प्रसाद गुण की परिभाषा लिखिए ।

उत्तर :— जिस काव्य रचना को पढते, सुनते ही अर्थ समझ में आ जाए, वहाँ प्रसाद गुण होता है। उदा:— विनती सुनलों हे भगवान हम सब बालक है नादान।

प्रश्न 3 माधुर्य गुण किसे कहते है ? माधुर्य गुण का सम्बन्ध किन रसों से होता है।

उत्तर :— माधुर्य काव्य का वह गुण है जो चित को पिघलाकर उसे आह्लादित बना देता है माधुर्य गुण का सम्बन्ध शृंगार, करूण और शांत रसों से होता है।

प्रश्न 4 माधुर्य गुण का एक उदाहरण लिखिए :—

उत्तर :— मंद —मंद मुरली बजावत अधर धरे,

मंद —मंद निकस्यो मुकुन्दमधुबन तें।

प्रश्न 5 ओज गुण किसे कहते है ओज गुण का सम्बंध किन रसों से होता है।

उत्तर :— ओज काव्य का वह गुण है जिसके कारण मन में उत्साह, उत्तेजना या तेजस्विता उत्पन्न होती है ओज गुण का सम्बन्ध वीर, रौद्र और वीभत्स रसों से होता है।

प्रश्न 6 ''होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन'' में कौनसा काव्य गुण है।

उत्तर :— उपर्युक्त पंक्तियों में ओज काव्य गुण है।

प्रश्न 7 हरिगीतिका छंद की परिभाषा एवं उदाहरण लिखिए।

उत्तर :— हरिगीतिका एक सम मात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 28—28 मात्राएँ होती है तथा 16—12 पर यति होती है तथा अन्त में लघु गुरू होता है ।

उदाहरण:— संसार की समर —स्थली में धीरता धारण करों।

चलते हुए निज इष्ट पथ पर संकटों से मत डरो।।

जीते हुए भी मृतक सम रहकर न केवल दिन भरों

वर—वीर बनकर आप अपनी विघ्न—बाधाएं हरो ।।

प्रश्न 8 छप्पय छंद की परिभाषा लिखिए :—

उत्तर :— यह विषम मात्रिक छंद है, छः चरणों का यह छंद रोला व उल्लाला छंद के योग से बनता है, प्रथम चार चरणों मे रोला छंद (प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ तथा 11, 13 पर यति) तथा अन्तिम दो चरणों में उल्लाला छंद (प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ व 15,13 पर यति) होता है।

(सुत्र — छरोउ रो—रोला, उ—उल्लाला, छ—छप्पय)

प्रश्न 9 कुण्डलिया छंद की परिभाषा /लक्षण लिखिए।

उत्तर :— यह विषम मात्रिक छंद होता है, छः (6) चरणों का यह छंद दोहा व रोला छंद के योग से बनता है, प्रथम दो चरण दोहे (प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ व 13,11 पर यति) के तथा अन्तिम चार चरण रोला छंद (प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ व 11,13 पर यति) होता है, कुण्डलिया छंद जिस शब्द या शब्द समूह से शुरू होता है उसी पर समाप्त होता है तथा दोहे का अन्तिम चरण रोला का प्रथम चरण बनता है।

सूत्र —कुण्डलियों दोरो दो—दोहा, रो—रोला

शेखावाटी मिशन—100

उदाहरणः— उदाहरण समझने की दृष्टि से है, परीक्षा में नहीं पूछा जाएगा

दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल दिन चारि को, ठाउं न रहत निदान।। दोहा
ठाउं न रहत निदान, विनय सब ही की कीजै।
मीठे वचन सुनाय, विनय सब ही की कीजै।।
कह गिरधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निसि दिन चारि, रहत सबही के दौलत।। रोला

प्रश्न 10 सवैया छंद की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर :— यह वर्णिक छंद है इसमें चार चरण होते है, प्रत्येक चरण में 22 से लेकर 26 तक वर्ण हो सकते है, वर्णों की संख्या के आधार पर इसके अनेक भेद होते है, जैसे मालती सवैया, चकोर सवैया आदि।

उदारहणः— मानुस हौं तो वही रखखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारिन।
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मंझारिना।।
पाहन हौं तो वही गिरि को जु भयो कर छत्र पुरन्दर—धारिन।
जो खग हौं तो बसेरों करों मिलि कालिदीं—कूल कदम्ब की डारिन।।

प्रश्न 11 समासोक्ति अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए :—

उत्तर :— जब कवि प्रस्तुत के वर्णन में समान अर्थसूचक विशेषणों के द्वारा प्रस्तुत अर्थ के साथ सांकेतिक रूप से अप्रस्तुत का भी बोध कराता है वहां समासोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरणः— सो दिल्ली अस निबहुर देसू।
कोई न बहुरा कहइ संदेसू।।
जो गवंनै सो तहाँ कर होई ।
जो आवै, किछु जान न सोई।।
(यहॉ दिल्ली का प्रस्तुत अर्थ के साथ अप्रस्तुत अर्थ परलोक भी निकलता है।)

प्रश्न 12 अन्योक्ति अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर :— जब कवि अप्रस्तुत के वर्णन के द्वारा प्रस्तुत का बोध कराता है तो वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है इसे अप्रस्तुत प्रशंसा भी कहते है। प्रस्तुत अर्थ वह होता है जिसका वर्णन करना कवि का अभीष्ट हो।

उदाहरणः— माली आवत देख कर कलियन करी पुकारि।
फूले—फूले चुन लिए काल्हि हमारी बारि।।

प्रश्न 13 प्रतीप व व्यतिरेक अलंकार में अन्तर स्पष्ट कीलिए।

उत्तर :— प्रतीप :— प्रतीप का अर्थ होता है उल्टा या विपरीत/इसमें उपमा के विपरीत स्वाभाविक उपयेय को उपमान और उपमान को उपमेय बना दिया जाता है, या उपमान की अपेक्षा उपमेय को श्रेष्ठ बताया जाए या उपमान का तिरष्कार किया जाएं वहाँ प्रतीप अलंकार होता है।

उदाहरण :— सीय बदन सम हिमकर नाहीं।

व्यतिरेक :— जब उपमान की अपेक्षा उपमेय को किसी गुण विशेष में बढकर या उत्कृष्ट बताया जाए वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है।

उदाहरणः— साधू ऊँचे शैल सम किन्तु प्रकृति सुकुमार।

प्रश्न 14 विभावना अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर :— जहाँ बिना कारण के या अपूर्ण कारण के या विपरीत कारण के कार्य का होना पाया जाता है वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदाहरणः— बिनु पद चलै सुनै बिनु काना
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।
अन्य उदाहरण — कारे घन उमड़ि अंगारे बरसत है।

प्रश्न 15 बहुवैकल्पिक प्रश्न :–

(1) ''राजा शिवराज के नगारन की धाक सुनि केते बादशाहन की छाति दरकती है''। पंक्तियों मे कौनसा काव्यगुण है

(अ) माधुर्य गुण (ब) प्रसाद गुण

(स) ओजगुण (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (स)

(2) ''है प्रभो आनन्द दाता। ज्ञान हमकों दीजिए''। इसमें कौनसा काव्य गुण है।

(अ) माधुर्य गुण (ब) ओजगुण (स) प्रसाद गुण (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (स)

(3) चित की उतेजना वृत्ति से ....गुण का सम्बन्ध होता है।

उत्तर :– ओजगुण

(4) हम जैसा बोयेंगे, वैसा ही पायेंगे, इसमें कौनसा काव्य गुण है।

(अ) माधुर्य गुण (ब) प्रसाद गुण (स) ओजगुण (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (ब)

(5) जिससे चित आह्लाद से द्रवित हो जाये, उस काव्य गुण को ....कहते है।

उत्तर :– माधुर्य गुण

(6) रोला और उल्लाला छंद के मेल से कौनसा छंद बनता है ?

(अ) कुण्डलिया (ब) छप्पय (स) हरिगीतिका (द) सवैया (ब)

(7) दोहा और ....छंद के योग से कुण्डलिया छंद बनता है।

(अ) रोला (ब) सोरठा (स) हरिगीतिका (द) कोई नहीं (अ)

(8) हरिगीतिका छंद के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएं होती है ?

(अ) 30 मात्राएँ (ब) 28 मात्राएँ (स) 32 मात्राएँ (द) 26 मात्राएँ (ब)

(9) 22 से लेकर 26 तक वर्णों तक के वृत्त ....छंद कहलाते है।

उत्तर :– सवैया

(10) बिन घनस्याम धाम–धाम ब्रज मंडल में,

उधो। नित बसति बहार बरसा की है, ''में अलंकार है

(अ) प्रतीप (ब) व्यतिरेक (स) विभावना (द) अन्योक्ति (स)

(11) जब कवि अप्रस्तुत के वर्णन के द्वारा प्रस्तुत का बोध कराता है वहाँ कौनसा अलंकार होता है।

(अ) अन्योक्ति (ब) समासोक्ति (स) विभावना (द) प्रतीक (अ)

(12) जब स्वाभाविक उपमेय को उपमान और उपमान को उपमेय बना दिया जाता है तब अलंकार है –

(अ) व्यतिरेक (ब) प्रतीप (स) विभावना (द) समासोक्ति (ब)

(13) जब उपमान की अपेक्षा उपमेय को किसी गुण विशेष में बढ़कर बताया जाए वहाँ ....अलंकार होता है।

उत्तर :– व्यतिरेक अलंकार

(14) ''कुमुदिनि हू प्रफूलित भयी सांझ कलानिधि जोइ'' मे अलंकार है

(अ) समासोक्ति (ब) अन्योक्ति (स) विभावना (द) कोई नहीं (अ)

(15) ''साई। घोड़न के अछत गदहन पायो राज'' में अलंकार है ।

(अ) अन्योक्ति (ब) विभावना (स) समासोक्ति (द) प्रतीप (अ)

हिन्दी साहित्य का इतिहास आधुनिक काल

प्रश्न 1 भारतेन्दु युग को पुनर्जागरण काल क्यों कहा जाता है ? इस काल मे निबंध विधा के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर :— भारतेन्दु युग में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्रों में जन चेतना में पुनर्जागरण की भावना पनपी। इसका प्रभाव भारतेन्दु युगीन कवियों में विषय चयन में व्यापकता व विविधिता के रूप में पड़ा। रीतिकालीन प्रवृतियों से निकलकर कवि मातृभूमि प्रेम, स्वदेशी वस्तुओं का व्यवहार, गोरक्षा, बाल—विवाह निषेध, शिक्षा प्रसार, मद्य निषेध, अस्पृश्यता आदि विषयों पर लिखने लगे। ब्रह्म समाज, प्रार्थना—समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द के विचारों व थियोसॉफिकल सोसाइटी के सिद्वांतो का भी सामान्य जन पर प्रभाव पड़ा। अंग्रेजी शिक्षा—साहित्य के अध्ययन मुद्रण यंत्रो के विस्तार व समाचार पत्रों के प्रकाशन ने जन—जागरण को बढ़ाया। इसलिए इस युग को पुनर्जागरण युग कहा गया।

निबंध विधा :— इस युग में विचारात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक विवरणात्मक, इतिवृतात्मक आदि शैलियों के निबंध लिखे गए। इस युग के प्रमुख निबंधकारो बालकृष्ण भट्ट प्रताप नारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन', भारतेन्दु हरिशचन्द्र, तथा लाला श्रीनिवासदास ने क्रमशः हिन्दी प्रदीप, ब्राह्मण, आनन्दकादम्बिनी, हरिशचन्द्र, मैगजीन तथा सदादर्श पत्रिकाओं का संपादन किया। आचार्य रामचन्द्र, शुक्ल ने बालकृष्ण भट्ट व प्रताप नारायण मिश्र को क्रमशः हिन्दी का स्टील व एडीसन कहा है। इस युग के सभी निबंधकारों ने समसामयिक विषयों बाल—विवाह, स्त्री शिक्षा, कृषकों की दुरावस्था, अंग्रेजी शिक्षा, देश सेवा आदि विषयों पर निबंध लिखें।

प्रश्न 2 भारतेन्दु युगीन नाट्य विद्या पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर :— हिन्दी नाटकों का आरम्भ भारतेंदु से ही माना जाता है। इस युग में पौराणिक, ऐतिहासिक, रोमानी एवं समसामयिक समस्याओं को लेकर खूब नाटक लिखें गये। भारतेन्दु अपने युग के श्रेष्ठ नाटककार थे। इन्होंने अनुदित और मौलिक दोनो नाटक लिखे। मौलिक नाटकों मे — वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, चद्रांवली, विषष्य विषमौषधम्, भारत दुर्दशा, नीलदेवी प्रमुख है। अनुदित नाटकों मे — विद्यासुंदर, पाखंड विडम्बन, धनजंय विजय, मुद्राराक्षस, सत्य हरिशचन्द्र, भारत जननी उल्लेखनीय है।

इस युग के अन्य नाटककारों ने श्री निवासदास का संयोगिता स्वयंवर, राधाचरण गौस्वामी का अमरसिंह राठौर राधाकृष्णदास का महाराणा प्रताप तथा किशोरीलाल गोस्वामी का प्रणयिनी परिणय, मंयक मंजरी को विशेष प्रसिद्धि मिली।

प्रश्न 3 भारतेन्दु युगीन उपन्यास विधा के विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :— भारतेन्दु युग में सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी—ऐयारी, जासूसी तथा रोमानी आदि अनेक विषयों पर खूब उपन्यास लिखे गए। अंग्रेजी ढंग का पहला मौलिक उपन्यास लाल श्रीनिवासदास का परीक्षा गुरू (1882) माना जाता है। इसके पूर्व श्रद्वाराम फुल्लौरी ने भाग्यवती (1877) लघु सामाजिक उपन्यास लिखा था। इस युग के अन्य सामाजिक उपन्यासों मे बालकृष्ण भट्ट का रहस्य कथा, नूतन ब्रह्मचारी का सौ अजान एक सुजान, राधाकृष्णदास का निस्सहाय हिंदू, लज्जाराम शर्मा का धूर्त रसिक लाल, स्वतंत्र रमा परतंत्र लक्ष्मी विशेष उल्लेखनीय है।

तिलस्मी ऐयारी उपन्यासों में देवकीनंदन खत्री का चंद्रकाता, चंद्रकांता— सन्तति, नरेन्द्र मोहिनी, वीरेन्द्र वीर और कुसुम कुमारी तथा हरेकृष्ण जौहर का कुसुमलता विशेष प्रसिद्ध रहे। इस युग के सर्वप्रधान उपन्यास लेखक किशोरी लाल गोस्वामी थे जिनके प्रमुख उपन्यास तारा, चपला, रजिया बेगम लवंगलता है।

प्रश्न 4 द्विवेदी युग को जागरण सुधार काल क्यों कहा जाता है ? इस युग के प्रमुख कवि एवं उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :— द्विवेदी युग का नामकरण आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर हुआ है। आचार्य द्विवेदी ने सन् 1903 से सरस्वती पत्रिका का संपादन शुरू किया। इस पत्रिका के माध्यम से द्विवेदी जी ने समकालीन कवियो को ब्रज भाषा छोड़कर खडी बोली में लिखने व नायिका भेद तथा समस्या पूर्ति आदि छोड़ विविध विषयों पर लिखने के लिए प्रेरित किया । इस कारण इस युग की कविता में विषय की दृष्टि से विविधता और नवीनता आई। द्विवेदी जी भाषा की शुद्धि एवं वर्तनी की एकरूपता के प्रबल समर्थक थे। उन्होने काव्य भाषा का व्याकरण की दृष्टि से परिमार्जन किया। इस कारण यह युग जागरण सुधार काल के नाम से जाना गया।

द्विवेदी युगीन प्रमुख कविः—

महावीर प्रसाद द्विवेदी :— द्विवेदी जी 1903 से लेकर 1920 तक सरस्वती पत्रिका के संपादक रहे। प्रमुख रचनाएं —काव्य मंजूषा, सुमन, कान्य कुब्ज, अबला —विलाप प्रमुख है।

श्रीधर पाठक :– ये खड़ी बोली के प्रथम समर्थ कवि थे। उनको सर्वाधिक सफलता प्रकृति चित्रण में मिली। प्रमुख रचनाएं वनाष्टक, काश्मीर, सुषमा, देहरादून और भारत गीत है। इसके अलावा गोल्डस्मिथ की डेजर्टेड विलेज व द ट्रेवलर का क्रमशः उजड़ ग्राम व श्रांत पथिक नाम से अनुवाद किया।

मैथिलीशरण गुप्त :– ये द्विवेदी काल के सर्वाधिक प्रिय कवि थे जो राष्ट्र कवि के नाम से प्रसिद्ध हुए। प्रमुख रचनाओं मे भारत –भारती (1912), पंचवटी, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जयभारत, विष्णु प्रिया प्रमुख है।

नाथूराम शर्मा 'शंकर' :– इन्होने सामाजिक कुरीतियों, आडम्बरो, अंधविश्वासों पर तीखे व्यंग्य किए। प्रमुख रचनाएं –शंकर सरोज, शंकर–सर्वस्व, तथा गर्भरण्डा रहस्य है।

अन्य कवियों में अयोध्या सिंह उपाध्याय (प्रिय प्रवास, पद्यप्रसून) रामनरेश त्रिपाठी (मिलन, पथिक, मानसी) प्रमुख है।

प्रश्न 5 आधुनिक काल के द्विवेदी युग की निबंध विकास यात्रा पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर :– इस युग में वर्णनात्मक, भावात्मक, विवरणात्मक, विचारात्मक, कथात्मक आदि सभी शैलियों में निबंध लिखे गए। द्विवेदी युगीन निबंधकारों ने समाज की हीनावस्था, आर्थिक विषमता, धार्मिक पत्तन और व्यापक राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर निबंध लिखे। महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबंध परिचयात्मक या आलोचनात्मक टिप्पणियों के रूप में है। उनका म्युनिसिपैलिटी कारनामे, निबंध व्यंग्य शैली में लिखा है। अन्य निबंध आत्मनिवेदन प्रभात सुतापराधे, जनकस्य दण्ड आदि प्रमुख है।

सरदार पूर्ण सिंह :– इस युग के श्रेष्ठ निबंधकार है। इन्होने नैतिकता और सामाजिकता को लेकर निबंध लिखे। आचरण की सभ्यता सच्ची वीरता मजदूरी और प्रेम, पवित्रता और कन्यादान इनके प्रसिद्ध निबंध है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मनोभावों पर आधारित श्रेष्ठ निबंध लिखे । जो चिंतामणि में संगृहीत है। प्रमुख निबंध भय और क्रोध, ईर्ष्या, घृणा, उत्साह, श्रद्धा,–भक्ति, लज्जा और ग्लानि तथा लोभ और प्रीति है।

इस युग के अन्य निबंधकारों में बाल मुकुन्द गुप्त (शिवशम्भु का चिट्ठा), चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (कछुआ धर्म और मारेसि मोहि कुठाउं) आदि उल्लेखनीय है।

प्रश्न 6 द्विवेदी युगीन गद्य साहित्य के विकास पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर :– इस युग में गद्य साहित्य की सभी विधाओं में प्रचुर मात्रा में लिखा गया, इस युग में साहित्य की प्रत्येक विधा में व्यापक राष्ट्रीय जागरण व सुधार की भावना विद्‌यमान है।

नाट्‌य साहित्य :– द्विवेदी युग में पौराणिक नाटकों में राधाचरण गोस्वामी का श्रीदामा, बालकृष्ण भट्‌ट का वेणुसंहार माखन लाल चतुर्वेदी का कृष्णार्जुन –युद्व, ऐतिहासिक नाटकों में जयशंकर प्रसाद का राज्यश्री, वृंदावन लाल वर्मा का सेनापति उदल, सामयिक उपादानों पर आधारित नाटकों में प्रतापनारायण मिश्र का भारत–दुर्दशा उल्लेखनीय है।

उपन्यास :– इस युग में तिलस्मी ऐयारी उपन्यासों में देवकीनंदन खत्री के काजर की कोठरी अनूठी बेगमः जासूसी उपन्यासों मे गोपाल राम गहमरी के सरकटी लाश चक्करदार चोरी, जासूस की भूल, ऐतिहासिक उपन्यासों में किशोरी लाल गोस्वामी के तारा वा क्षात्रकुलकमलिनी, मल्लिका देवी वा बंग सरोजिनी, सामाजिक उपन्यासों में लज्जाराम शर्मा का आदर्श दम्पति, प्रेमचंद का सेवा सदन विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे।

कहानी :– द्विवेदी युग में हिन्दी कहानी विधा का जन्म हुआ । इस युग की प्रमुख कहानियों में बंग महिला की दुलाईवाली, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की ग्यारह वर्ष का समय, चंद्रधर शर्मा, 'गुलेरी' की उसने कहा था विशेष चर्चित रही ।

निबंध :– इस युग में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने म्युनिसिपेलिटी कारनामें, आत्म निवेदन, सरदार पूर्ण सिंह ने आचरण की सभ्यता, सच्ची वीरता, आचार्य श्री रामचन्द्र शुक्ल ने भय और क्रोध, ईर्ष्या जैसे मनोविकार विषयक निबंध लिखकर निबंध विधा का समृद्ध किया।

इस युग में गद्य की अन्य विधाओं आलोचना, जीवनी (दादाभाई नौरोजी, लोकमान्य तिलक), यात्रावृत व संस्मरण मे भी पर्याप्त साहित्य लिखा गया।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 7 छायावाद की प्रमुख विशेषताओं एवं कवियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :— 1918 से 1936 तक का काल छायावाद के नाम से जाना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद शब्द की व्याख्या रहस्यवाद व प्रतीक शैली के अर्थ में की है। छायावादी काव्य अनुभूति की तीव्रता सूक्ष्मता और अभिव्यंजना शिल्प के उत्कर्ष की दृष्टि से श्रेष्ठ काव्य है। इस काल के काव्य ने प्राचीन भारतीय परम्परा के जीवंत तत्वों के समावेश के साथ परवर्ती काव्य के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। छायावादी काव्य सर्वांगीण जीवन के उच्चतम आदर्श को व्यक्त करने का प्रयास करता है। इस युग में स्वच्छंदतावादी प्रवृति के साथ नैतिक दृष्टि प्रधान है। यह युग भारत की अस्मिता की खोज का युग है।

प्रमुख कवि :— जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला तथा महादेवी वर्मा को छायावाद के चतुर्स्तम्भ के रूप में जाना जाता है।

जयशंकर प्रसादः— कायायनी (1935) इनका प्रसिद्ध महाकाव्य है। अन्य प्रसिद्ध रचनाएं वनमिलन, प्रेमराज्य महाराणा का महत्व, झरना, आँसू, लहर है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : ये अपनी धुन के पक्के और फक्कड़ स्वभाव के थे। इनकी रचनाएं जूही की कली, अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, राम की शक्तिपूजा (सबसे प्रसिद्व कविता) है।

सुमित्रानंदन पंतः— पंत जी का मन प्रकृति के मनोरम रूपों की ओर विशेष आकृष्ट हुआ । प्रमुख रचनाएं गिरजे का घंटा (पहली कविता), उच्छवास, ग्रंथि, वीणा, पल्लव, गुंजन, युगांत है।

महादेवी वर्माः— आधुनिक युग की मीरां के नाम से प्रसिद्ध महादेवी वर्मा के काव्य में विरह वेदना व रहस्यवाद की प्रधानता है। प्रमुख रचनाएं नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत है। यामा में नीहार रश्मि, नीरजा सांध्यगीत के सभी गीतों का संग्रह है।

अन्य छायावादी कवियों में माखन लाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा, 'नवीन' तथा भगवती चरण वर्मा प्रमुख है। प्रेम और मस्ती के काव्य के कवियों में हरिवंशराय बच्चन, नरेन्द्र शर्मा, हृदयेश, व हरिकृष्ण प्रेमी विशेष उल्लेखनीय है।

प्रश्न 8 छायावाद युगीन उपन्यास विधा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर :— उपन्यास लेखन की दृष्टि से इस युग को निर्विवाद रूप से प्रेमचन्द युग कहा गया है। प्रेमचन्द हिन्दी कथा साहित्य को मनोरंजन के स्तर से उठाकर जीवन के वास्तविक धरातल पर लाए। उन्होने जीवन और समाज की अनेक समसामयिक समस्याओं जैसे पराधीनता, किसानों का शोषण, निर्धनता, दहेज—प्रथा बेमेल विवाह, वैश्याओं की जिंदगी साम्प्रदायिक वैमनस्य आदि को अपने उपन्यासों के माध्यम से उठाया। गोदान उपन्यास ग्राम्य जीवन और कृषि संस्कृति का महाकाव्य है। अन्य उपन्यास रचनाएं सेवासदन, प्रेमाश्रय, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि प्रमुख है। प्रेमचन्द के समकालीन उपन्यासकारों में विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' ने मां, भिखारिणी, शिवपूजन सहाय ने देहाती दुनिया (प्रथम आंचालिक उपन्यास), बेचेन शर्मा 'उग्र' ने चन्द हसीनों के खुतूत, दिल्ली का दलाल, शराबी उपन्यास लिखे। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों मे जैनेन्द्र ने परख, सुनिता, त्याग पत्र उपन्यास लिखे। वृंदावन लाल वर्मा ने गढ कुंडार, विराटा की पद्मिनी ऐतिहासिक उपन्यास लिखे।

प्रश्न 9 प्रगतिवादी काव्यधारा का आशय स्पष्ट करते हुए प्रगतिवादी काव्य की प्रवृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :— प्रगतिवाद— जो काव्य मार्क्सवादी दर्शन की सामाजिक चेतना और भावबोध को अपना लक्ष्य बनाकर चला उसे प्रगतिवाद के नाम से जाना गया।

प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख प्रवृतियां :—

इसमें शोषित पीडित वंचित वर्ग की पीड़ा को अभिव्यक्ति देकर उसके प्रति सहानुभूति व्यक्त की गई है।

अंध विश्वासों ,रूढियो का खण्डन किया गया है ।

प्रगतिवादी कवियों ने पूंजीवाद के प्रति क्षोभ प्रकट करते हुए साम्यवाद में आस्था प्रकट की है।

प्रगतिवाद के प्रमुख कवियों में सुमित्रानंदन पंत (युगवाणी, ग्राम्या) निराला (कुकुरमुता, गर्म पकौड़ी, रानी और कानी, मास्को डायलाग्य, नये पत्ते) केदारनाथ अग्रवाल (युग की गंगा) नागार्जुन (बादल को घिरते देखा है, युगधारा, पाषाणी) रांगेयराघव (अजेय खंडहर, पिघलते पत्थर) प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है।

शेखावाटी मिशन—100

प्रश्न 10 प्रयोगवाद क्या है ? 'प्रयोगवाद' की विशेषताओं को बताते हुए प्रथम तार सप्तक के कवियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :– हिन्दी काव्य मे प्रयोगवाद का प्रारम्भ सन् 1943 में अज्ञेय द्वारा संपादित तार सप्तक के प्रकाशन से माना जाता है। जो कविताएं नए बोध, संवेदनाओं तथा शिल्पगत चमत्कारों के साथ सामने आई उन कविताओं के लिए प्रयोगवाद शब्द रूढ़ हो गया।

प्रमुख विशेषताएं :–

प्रयोगवादी कविताओं मे ह्रासोन्मुख मध्यवर्गीय समाज के जीवन का चित्रण है।

प्रयोगवादी कवि यथार्थवादी है वे भावुकता के स्थान पर ठोस बौद्धिकता को स्वीकार करते है।

ये कवि मध्यवर्गीय व्यक्ति के जीवन की समस्त जड़ता, कुण्ठा, अनास्था पराजय और मानसिक संघर्ष के सत्य को बड़ी बौद्धिकता के साथ उद्घाटित करते हैं।

दमित यौन–वासना के नग्न रूप को प्रस्तुत किया है।

प्रयोगवादी कविता ने लघुमानव को उसकी समस्त हीनता और महत्ता के सन्दर्भ में प्रस्तुत कर सहानुभूति प्रकट की है।

प्रथम तारसप्तक (1943) के 7 कवि –

नेमीचन्द जैन, गजानन माधव मुक्तिबोध, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजा कुमार माथुर, रामविलास शर्मा तथा अज्ञेय है।

ट्रिक– प्र भु राम ने अज्ञेय से गिरी को मुक्त कराया

प्रभाकर माचवे भारत भूषण रामविलास नेमीचन्द अज्ञेय | गिरिजाकुमार माथुर मुक्ति बोध

प्रश्न 11 छायावादोत्तर युग में उपन्यास विधा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर :– छायावादोतर (प्रेमचन्द के बाद) युग में उपन्यास की विकास यात्रा को मोटे रूप से तीन दशकों मे बांट सकते है

(1) 1950 ई. तक के उपन्यास :– इस दशक के उपन्यास फ्रायड और मार्क्स की विचारधारा से प्रभावित है। फ्रायड से प्रभावित उपन्यासकारों मे जैनेन्द्र मनोविज्ञान व इलाचन्द्र जोशी मनोविश्लेषण से प्रभावित है। जैनेन्द्र के उपन्यास – कल्याणी, सुखदा, विवर्त, व्यतीत तथा इलाचन्द जोशी के उपन्यास–संन्यासी, निर्वासित, पर्दे की रानी, मुक्तिपथ, जिप्सी प्रमुख है। मार्क्स की विचारधारा के उपन्यासकारों में यशपाल (दादा कामरेड, पार्टी कामरेड, झूठा सच, देशद्रोही) उपेन्द्रनाथ अश्क (गिरती दीवारें) अमृतलाल नागर (नवाबी मसनद, बूँद और समुद्र, अमृत और विष) प्रमुख है।

(2) 1950 से 1960 तक :– यह दशक प्रयोगात्मक विशेषताओं का है इस दशक मे आंचलिक उपन्यासों में फणीश्वर नाथ रेणु ने मैला आंचल, परती परिकथा, नागार्जुन ने बलचनामा, रतिनाथ की चाची, बाबा बटेसरनाथ, रांगेय राघव ने कब तक पुकारूं आदि लिखे ।

(3) 1960 के बाद :– 1960 के बाद का युग आधुनिकतावादी विचारधारा से पोषित है। इस युग में मोहन राकेश का 'अंधेरे बंद कमरे,' निर्मल वर्मा का 'वे दिन' राजकमल चौधरी का 'मरी हुई मछली', महेन्द्र भल्ला का 'एक पति के नोट्स' श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी' विशेष रूप से उल्लेखनीय उपन्यास है।

प्रश्न 12 छायावादोत्तर युग मे समकालीन निबंध पर टिप्पणी लिखिए

उत्तर :– इस युग मे निबंध परंपरा अधिक एकाग्र एवं प्रधान विधा के रूप मे गतिशील है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं महावीर प्रसाद द्विवेदी की निबंध परंपरा का विकास यहां अवरूद्ध न होकर चिंतन की नई बुलंदियों को प्राप्त कर रहा है। इस युग के निबंधकारों में अज्ञेय के निबंध पाठक को सर्वाधिक प्रभावित करते है। उनके समीक्षात्मक निबंध बेजोड़ होते है। अज्ञेय के सर्जना और संदर्भ, कहाँ है द्वारिका प्रधान निबंध संग्रह है। विद्यानिवास मिश्र ने शिक्षा संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में ललित निबंध लिखे। परंपरा बंधन नहीं, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, तारों के आर पार, अस्मिता के लिए, चितवन की छाँह, आँगन का पंछी इत्यादि आपके मुख्य निबंध संग्रह है। समीक्षात्मक निबंधो मे अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया है गजानन माधव मुक्तिबोध ने। मुक्तिबोध ने अपने निबंध संग्रह नई कविता का आत्म संघर्ष तथा एक साहित्यिक की डायरी के माध्यम से समीक्षा को एक नवीन गति प्रदान की। विजयदेव नारायण साही ने लघु मानव के बहाने हिंदी कविता पर बहस से सभी का ध्यान आकर्षित किया। इनके अलावा निर्मल वर्मा, नेमीचन्द जैन ने भी निबंध के क्षेत्र में खास पहचान बनाई। रामविलास शर्मा की निबंध शैली स्वच्छता प्रखरता और वैचारिकता लिए हुए है। इनके निबंध संग्रह विराम चिह्न, मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य, कथा विवेचन और गद्य शिल्प, मार्क्स और पिछडे हुए समाज है। इस कालखंड के निबंधकारों ने राजनीतिक और सांस्कृतिक विषयों पर चिंतन की ताजगी की स्याही से अपने निबंधों को उकेरा है।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 13 नई कहानी सचेतन कहानी, अकहानी और समानांतर कहानी का अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :– **नई कहानी :–** मार्कण्डेय के अनुसार नई कहानी से हमारा मतलब उन कहानियों से है जो सच्चे अर्थों में कलात्मक निर्माण है। जो जीवन के लिए उपयोगी है और महत्वपूर्ण होने के साथ ही उसके किसी न किसी नए पहलू पर आधारित है।

सचेतन कहानी :– इस कहानी मे वैचारिकता को विशेष महत्व दिया जाता है। इसके प्रवर्तक महीप सिंह है।

अकहानी :– कहानी के स्वीकृत मूल्यों के प्रति निषेध व्यक्त करते हुए तथा कहानी का स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार करते हुए लिखी गई कहानियाँ ही अकहानी कहलाती है। इसके सूत्रधार निर्मल वर्मा है।

प्रश्न 14 छायावाद युगीन कहानी विधा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए

उत्तर :– आधुनिक हिंदी कहानी का विकास सच्चे अर्थो में इसी काल मे हुआ था। कहानी परंपरा में प्रेमचन्द का आदर्शवादी एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण साथ–साथ दिखाई देता है। आपने तकरीबन 300 कहानियां लिखी जो मानसरोवर के आठ खंडो में प्रकाशित हुई थी। बूढी काकी, कजाकी, सवा सेर गेहूँ, ठाकुर का कुआँ, ईदगाह, सद्गति मुख्य कहानियाँ है। इस काल के दूसरे प्रमुख कहानीकार जयशंकर प्रसाद है। इनकी कहानियों में जीवन के यथार्थ की जगह स्वर्णिम अतीत के गौरव को अधिक स्थान दिया गया है। प्रतिध्वनि, इन्द्रजाल, आकाशदीप और आँधी इनकी मुख्य कहानी संग्रह है। इस युग के अन्य कहानीकारों में विश्वंभर नाथ 'कौशिक' तथा सुदर्शन प्रेमचंद की धारा के अनुयायी हैं। पांडे बेचन शर्मा 'उग्र' ने एक नई कहानी धारा का विकास किया। उनकी कहानियों में सामाजिक विद्रोह के खिलाफ उग्र आक्रोश की अभिव्यक्ति हुई है। जैनेद्र ने घटना के स्तर से मानव चरित्र और मनोवैज्ञानिक स्तर पर ला खड़ा किया। अज्ञेय ने भारतीय समाज की रूढ़िवादिता, शोषण तत्कालीन विश्व में व्याप्त संघर्ष को अपनी कहानियों में स्थान दिया। राहुल सांकृत्यायन और सुभद्रा कुमारी चौहान ने सामाजिक व पारिवारिक व्यवहार पर केन्द्रित कहानियों की रचना की।

समानांतर कहानी :– इस प्रकार की कहानियों में निम्नवर्गीय समाज की स्थिति, विषमता और समस्याओं का चित्रण हुआ है। सारिका पत्रिका ने इस प्रकार की कहानियों का एक आंदोलन खड़ा कर दिया था। इसके प्रवर्तक कमलेश्वर है।

प्रश्न 15 उपन्यास और कहानी में क्या अंतर है ?

उत्तर :– **उपन्यास :–** आधुनिक युग मे उपन्यास शब्द अंग्रेजी के NOVEL के अर्थ में प्रयुक्त होता है जिसका अर्थ है दीर्घ कथात्मक गद्य रचना। अर्थात् उपन्यास एक गद्य आख्यान या वृतांत होता है जिसके अंतर्गत एक वास्तविक जीवन के प्रतिनिधित्व का दावा करने वाले पात्रों और कार्यो का चित्रण किया जाता है। कहा जा सकता है कि उपन्यास में जीवन का संपूर्ण चित्र देखने को मिलता है तथा इसका आकार बड़ा या दीर्घ होता है।

कहानी– अंग्रेजी में इसके लिए STORY शब्द का इस्तेमाल किया जाता है कहानी में जीवन के किसी एक पक्ष या संवेदना का चित्रण होता है। कहने को तो उपन्यास और कहानी दोनों में ही कथा तत्व विद्यमान रहता है किंतु इन दोनों में मौलिक भेद यह है कि कहानी जीवन के किसी एक घटना या संवेदना का चित्रण करती है जबकि उपन्यास में संपूर्ण जीवन की समग्रता का चित्रण उपस्थित रहता है।

प्रश्न 16 नाटक और एकांकी मे अंतर स्पष्ट कीलिए।

उत्तर :– नाटक और एकांकी दोनों ही दृश्य काव्य की विधाएं है। इन दोनों का ही रंगमंच पर पात्रों के द्वारा अपनी–अपनी भूमिकाओं में मंचन किया जाता है। नाटक और एकांकी में मुख्य अंतर इस प्रकार है :–

नाटक की कथावस्तु वृहत् या लंबी होती है। इसमें एक मुख्य कथा तथा उसके साथ ही कुछ और गौण या प्रासंगिक कथाएं चलती है। नाटक की कथावस्तु की विकास प्रक्रिया धीमी होती है। इसके कथानक में फैलाव और विस्तार ज्यादा होता है तथा पात्रों की संख्या भी ज्यादा होती है।

एकांकी– एकांकी दृश्य काव्य का ही साहित्यिक रूप है। इसमें सिर्फ एक ही कथा होती है कोई गौण कथा नहीं होती। इसका कथानक छोटा या अल्प होता है। इसके कथानक के विकास की प्रक्रिया तीव्र गति से चलती है। कथानक में फैलाव या विस्तार नहीं होता। पात्रों की संख्या बहुत ही कम या संक्षिप्त होती है। कथावस्तु बहुत ही छोटी होती है जिसे एक ही समय में रंगमंच पर मंचित किया जा सकता है।

प्रश्न 16 रेखाचित्र और संस्मरण विधा की परिभाषा देते हुए अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :– **रेखाचित्रः–** जिस प्रकार कोई चित्रकार थोड़ी सी रेखाओं द्वारा सजीव चित्र बना देता है उसी प्रकार थोड़े से शब्दों में किसी वस्तु अथवा घटना का चित्रण करना रेखाचित्र कहलाता है।

संस्मरण :– अतीत की स्मृतियों के सहारे किसी विशेष व्यक्ति अथवा स्थान की विशेषताओं का अंकन अत्यन्त सूक्ष्मता से करना संस्मरण कहलाता है।

अन्तर :– रेखाचित्र और संस्मरण में स्पष्ट विभाजन रेखा खींचना अत्यन्त कठिन है फिर भी दोनों में कुछ अन्तर किये जा सकते है। रेखाचित्र वस्तुनिष्ठ और संस्मरण व्यक्तिनिष्ठ होता है, रेखाचित्र एक ही वस्तु घटना या चरित्र प्रधान होता है तथा इसमें अनुभूत जीवन का सत्य व्यक्त होता है जबकि संस्मरण व्यक्ति या स्थान के गहरे सम्पर्क के आधार पर लिखा जाता है और इसके मूल में अतीत की स्मृतियां होती है। यर्थाथ अनुभूति, संवेदनशील दृष्टि, तटस्थता तथा सूक्ष्म निरीक्षण रेखाचित्रकार के आवश्यक गुण है। सूक्ष्म विश्लेषण, सजीव चित्रण शक्ति, सहानुभूतिपूर्ण हृद्‌य तथा सहज स्वाभाविकता संस्मरण लेखक के आवश्यक गुण है। पद्‌म सिंह शर्मा का 'पद्‌म पराग' हिन्दी का पहला रेखाचित्र है। संस्मरण साहित्य प्रसिद्ध साहित्यकारों व महापुरूषों से संबधित ही अधिक लिखा गया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. महावीद प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका का सम्पादन भार कब से संभाला ?
(क) 1900 (ख) 1903 (ग) 1920 (घ) 1910 (ख)

2. आधुनिक काल की शुरूआत मानी गयी है।
(क) 1843 ई. से (ख) 1850 ई. से (ग) 1900 ई. से (घ) 1875 ई. से (क)

3. भारतेन्दु युगीन कवियों में शामिल नहीं है।
(क) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' (ख) प्रताप नारायण मिश्र
(ग) जगन्मोहन सिंह (घ) जयशंकर प्रसाद (द)

4. द्विवेदी काल का समय है :–
(क) 1900–1950 (ख) 1900–1918 (ग) 1900–1925 (घ) 1925–1950 (ख)

5. मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्व रचना 'भारत भारती' का प्रकाशन वर्ष है :–
(क) 1910 (ख) 1911 (ग) 1912 (घ) 1915 (ग)

6. निम्न से कौन जासूसी उपन्यासकार थे ?
(क) देवकी नन्दन खत्री (ख) गोपाल राम गहमरी (ग) किशोर लाल गोस्वामी (घ) प्रेमचंद (ख)

7. सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन वर्ष है :–
(क) 1900 (ख) 1901 (ग) 1903 (घ) 1905 (क)

8. अंग्रेजी ढंग का पहला मौलिक उपन्यास माना जाता है।
(क) भाग्यवती (ख) परीक्षा गुरू (ग) चन्द्रकांता (घ) निस्सहाय हिन्दू (ख)

9. किशोर लाल गोस्वामी की इंदुमती कहानी सरस्वती पत्रिका में कब प्रकाशित हुई ?
(क) 1900 (ख) 1902 (ग) 1905 (घ) 1915 (क)

10. 'उसने कहा था' कहानी के लेखक कौन है ?
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) प्रेमचन्द (ग) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (घ) वृंदावन लाल वर्मा (ग)

11. छायावादी काव्य का रचनाकाल माना जाता है –
(क) सन् 1900 से 1918 तक (ख) सन् 1918 से 1936 तक
(ग) सन् 1900 से 1925 तक (घ) सन् 1843 से 1900 तक (ख)

12. स्कन्दगुप्त नाटक के नाटककार है –
(क) रामकुमार वर्मा (ख) लक्ष्मीनारायण मिश्र (ग) जयंशकर प्रसाद (घ) भारतेन्दु हरिशचन्द्र (ग)

13. निम्न से कौनसा कवि प्रमुख छायावादी कवि नहीं है।
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) नागार्जुन (ग) सुमित्रानंदन पंत (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (ख)

14. प्रगतिवादी काव्य का काल माना जाता है –
(क) सन् 1918 से 1936 तक (ख) सन् 1936 से 1943 तक
(ग) सन् 1943 से 1953 तक (घ) सन् 1960 से बाद (ख)

15. निम्न में से कौन प्रथम तार सप्तक का कवि नहीं है ?
(क) प्रभाकर माचवे (ख) रामविलास शर्मा (ग) अज्ञेय (घ) नरेश मेहता (घ)

16. प्रयोगवादी काव्य का प्रारम्भ माना जाता है –
(क) 1936 से (ख) 1940 से (ग) 1943 से (घ) 1950 से (ग)

17. निम्न में से कौनसा उपन्यास प्रेमचन्द का नहीं है ?
(क) निर्मला (ख) रंगभूमि (ग) गबन (घ) मैला आंचल (घ)

18. प्रयोगवाद का प्रवर्तक किसे माना जाता है ?
(क) अज्ञेय (ख) प्रेमचंद (ग) सुमित्रानंदन पंत (घ) निराला (क)

19. सुमेलित कीजिए

साहित्यकार	पत्रिका का नाम
(1) बालकृष्ण भट्ट	(क) हरिशचंद्र चन्द्रिका
(2) प्रताप नारायण मिश्र	(ख) हिन्दी प्रदीप
(3) भारतेन्दु हरिशचन्द्र	(ग) आनंद कादम्बिनी
(4) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'	(घ) ब्राह्मण

उत्तर :– (1) –––(ख), (2)–––(घ), (3)–––(क), (4)–––(ग)

20. सुमेलित कीजिए –

समकालीन कहानी आंदोलन	प्रवर्तक
(1) सचेतन कहानी	(क) निर्मल वर्मा
(2) अकहानी	(ख) कमलेश्वर
(3) समानान्तर कहानी	(ग) महीप सिंह

उत्तर :– (1)–––(ग), (2)–––(क), (3)–––(ख)

21. भारत में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई –
(क) 1920 ई. (ख) 1930 ई. (ग) 1936 ई. (घ) 1940 ई. (ग)

मंदाकिनी

हिन्दी गद्य का विकास

प्रश्नः– 1 निबन्ध और लेख में अंतर बताइए ?

उत्तर समान्यतः गद्य में लिखित किसी भी रचना को लेख कह सकते है । किन्तु विशिष्ट अर्थ में लेख गद्य रचना के लिए प्रयुक्त होने लगा है । निबंध एक लेख हो सकता है किन्तु सभी लेख निबन्ध नहीं हो सकते है। क्योंकि निबंध में लेखक व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप परिलक्षित होना नितांत आवश्यक है।

प्रश्नः– 2 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन कब हुआ ?

उत्तर 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन सन् 1900 ई. में हुआ ।

प्रश्नः– 3 हिन्दी साहित्य की प्रथम एकांकी कौनसी है ?

उत्तर जयशंकर प्रसाद की रचना 'एक घूँट'

प्रश्नः–4 फीचर किसे कहते है ?

उत्तर पाश्चात्य प्रभाव से आई यथा तथ्य सूचनाओं पर आधारित रचना को फीचर कहा जाता है।

शेखावाटी मिशन–100

राष्ट्र का स्वरूप

प्रश्नः– 1 किसी भी राष्ट्र के स्वरूप के लिए आवश्यक तत्व कौन–कौन से है ?

उत्तर (अ) भूमि (ब) जन (स) संस्कृति

प्रश्नः– 2 राष्ट्रीयता की कुंजी क्या है ?

उत्तर भूमि माता है और में इसका पुत्र हूँ। जन के हृदय में इस सूत्र का अनुभव ही राष्ट्रीयता की कुंजी है।

प्रश्नः– 3 पृथ्वी वसुंधरा क्यों कहलाती है?

उत्तर पृथ्वी की कोख में अमूल्य निधियाँ भरी है, जिनके कारण वह वसुंधरा कहलाती है।

प्रश्नः– 4 हमारी राष्ट्रीयता बलवती कैसे हो सकती है ?

उत्तर हमें अपनी मातृभूमि के भौतिक रूप, सौंदर्य और समृद्धि के प्रति सचेत होना आवश्यक है। भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति हम जितने अधिक जाग्रत होगें उतनी ही हमारी राष्ट्रीयता बलवती होगी । अतः हमें पृथ्वी के भौतिक स्वरूप की आद्योपान्त जानकारी प्राप्त करना, उसकी सुंदरता, उपयोगिता और महिमा को पहचानना आवश्यक है। क्योंकि वह पृथ्वी समस्त राष्ट्रीय विचारधाराओं की जननी है।

प्रश्नः– 5 ''जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है।'' से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर लेखक ने राष्ट्र–जीवन रूपी विटप अर्थात वृक्ष के पुष्प संस्कृति से समानता स्थापित करते हुए बताया है कि जिस प्रकार एक वृक्ष का सर्वोतम अंग उसका पुष्प हुआ करता है उसका सौन्दर्य , गौरव और मधुरस पुष्प में ही विधमान रहता है, ठीक उसी प्रकार किसी राष्ट्र की संस्कृति भी उसका गौरव उसका सुंदर और सुखद रूप तथा राष्ट्रीय जीवन की शोभा होती है। राष्ट्रीय जीवन का सौंदर्य और यश उसकी संस्कृति के सौंदर्य और सौरभ में ही अंतर्निहित रहता है। अतः यह कहना पूर्णतः सत्य है कि जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है।

प्रश्नः– 6 लेखक ने राष्ट्रीयता की कुंजी किसको माना है और क्यों ?

अथवा

''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथ्विाः के भाव को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर ''माता भूमि पुत्रोऽहं पृथ्विया'' जन के हृदय में इस सूत्र का अनुभव ही राष्ट्रीयता की कुंजी है। इसी भावना से राष्ट्र–निर्माण के अंकुर उत्पन्न होते है । भूमि माता है और में उसका पुत्र हूँ यह भाव जब सशक्त रूप में जाग्रत होता है तब मनुष्य पृथ्वी के साथ अपने सच्चे सम्बंध को प्राप्त करते है जिस समय भी जन का हृदय भूमि के साथ माता और पुत्र के संबंध को पहचानता है, उसी क्षण राष्ट्रीयता की भावना साकार रूप प्राप्त कर लेती है।

प्रश्नः– 7 संस्कृति को जन का मस्तिष्क क्यों कहा जाता है ? समझाइए ?

उत्तर डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने राष्ट्र–जीवन में सस्कृति को बहुत महत्वपूर्ण तत्व बताया है । मानव शरीर में जो महत्त्व मस्तिष्क का है वही स्थान राष्ट्र में संस्कृति का है, जिस प्रकार स्वस्थ मस्तिष्क शरीर को सुचारू रूप से संचालित करता है उसी प्रकार स्वस्थ एवं पुष्पित संस्कृति किसी राष्ट्र को आगे बढ़ाने में सहायक होती है।

प्रश्नः– 8 किसी भी राष्ट्र को सम्पूर्ण रूप से समझने के लिए किन आधारभूत तत्वों का होना आवश्यक है ?

उत्तर किसी भी राष्ट्र को सम्पूर्ण रूप से समझने के लिए तीन तत्व प्रधान होते है –

1. भूमि जो माता की संज्ञा से अभिहित की गयी है।

2. दूसरा तत्व मातृभूमि पर निवास करने वाले लोग (जन) है। जन के कारण ही पृथ्वी माता कहलाती है। भूमि माता है और मैं इसका पुत्र हूँ, का भाव ही राष्ट्रीयता की कुंजी है।

3. तीसरा तत्व संस्कृति है। यह मानव के जीवन रूपी वृक्ष के पुष्प के समान हैं। इसके बिना राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती है क्योंकि इसकी उन्नति पर ही राष्ट्र की उन्नति निर्भर करती है।

प्रश्नः– 9 ''यही राष्ट्र संवर्धन का स्वाभाविक प्रकार है'' लेखक के इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर डाक्टर वासुदेव शरण अग्रवाल के इस कथन का आशय यह है कि मानव को अपने राष्ट्र के अतीत के गौरवमय आदर्शों और सांस्कृतिक चरित्रों से प्रेरणा लेकर अपने वर्तमान और भविष्य का श्रेष्ठ निर्माण करना चाहिए। इससे राष्ट्र के निवासियों में अपने पूर्वजों के उज्ज्वल चरित्र, धर्म–विज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो कुछ भी प्रशंसनीय कार्य किया है, उन्हें गौरव के साथ अपनाने का भाव जागृत होता है तब उनमें स्वतः ही राष्ट्र संवर्धन की भावना जागृत होती है और राष्ट्र उन्नति के शिखर की ओर अग्रसर होता है।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्नः— 10 मेघ हमारे अध्ययन की परिधि में क्यों आने चाहिए ?

उत्तर मेघ के बरसने से ही पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति बढ़ती है। प्रकृति अपने सौदंर्य को प्राप्त करती है। पेड़—पौधे और विभिन्न प्रकार की वनस्पति विकसित होती है। अतः उसके निर्माण और विकास की प्रक्रिया को जानना हमारे लिए आवश्यक है। जब हम मेघों का अध्ययन करेंगे तभी हमें उसकी निर्माण प्रक्रिया और पृथ्वी के लिए उसकी उपयोगिता का ज्ञान होगा।

निर्वासित (सूर्यबाला)

प्रश्नः— 1 माँजी बच्चों को सुलाने के लिए कौन सी कहानी सुनाती थी ?

उत्तर माँजी बच्चों को सुलाने के लिए ''ढ़ाका, बंगाला कौआ'' की कहानी सुनाती थी।

प्रश्नः— 2 ''निर्वासित'' कहानी के प्रारम्भ की पंक्तियां कौनसे भावों को अभिव्यक्त करती है ?

उत्तर कहानी के प्रारम्भ की पंक्तियां जीवन में उदासीनता, नीरसता और निराशा के भावों की अभिव्यक्ति करती हैं।

प्रश्नः— 3 बड़े बेटे राजेन के पास जाने को लेकर पड़ौसियों ने क्या कहा ?

उत्तर बड़े बेटे राजेन के पास जाने की बात को लेकर पड़ौसियों ने कहा कि उन्हें अवश्य रूप से अपने बेटे के पास जाना चाहिए। उनकी यह उम्र भी आराम करने की है। यहाँ सब सामान बाजार से बाबूजी ही लाते हैं, वहाँ तो बेटा इतना बड़ा अफसर है तो हर काम के लिए नौकर मिलेगें बहू रीमा भी सुशील हैं। लेकिन एक पड़ौसिन ने कहा कि वहाँ पर आराम तो मिलेगा परंतु ऐसी आजादी वहाँ नहीं मिलेगी।

प्रश्नः— 4 ऐसी क्या बात हुई जिसने राजेन की माँ और बाबूजी को अंदर तक झकझोर दिया ?

उत्तर जब बाबूजी ने माँ को बताया की उन्हें अपने छोटे बेटे रणधीर के साथ उसके घर जाना होगा और उसे बड़े बेटे राजेन के साथ यहीं रहना होगा। इस अप्रत्याशित बात ने उन दोनों को अंदर तक झकझोर दिया। एक—दूसरे से अलग होने की पीड़ा उनके लिए असहनीय थी।

प्रश्नः— 5 वर्तमान संदर्भों में ''निर्वासित'' कहानी की प्रासंगिकता समझाइये।

उत्तर वर्तमान समाज में भौतिकता और आर्थिक परिस्थितियों मानव जीवन के मूल्यों और भावनाओं पर अधिक हावी होते जा रहे है। इस कहानी में लेखिका ने स्पष्ट किया है कि आज सम्पन्न और समृद्ध पुत्रों को भी अपने वृद्ध माता—पिता का साथ रहना भारी लगने लगा है। दो भाई अपने माता—पिता को वृद्धावस्था में अलग—अलग रहने को मजबूर कर देते है। आधुनिकता एवं भौतिकवादिता की अंधाधुंध दौड़ में मानवीय संवेदनाओं व संस्कारों की तिलांजलि दे ही जाती है।

प्रश्नः— 6 स्पष्ट कीजिए कि ''निर्वासित'' कहानी में वातावरण पूर्णतया यथार्थ और प्रभावोत्पादक लगता है।

उत्तर कहानी में वातावरण का अर्थ उन सभी परिस्थितियों से होता है जिनमें कहानी की घटनाएं घटित हो रही है। यथार्थ और स्वाभाविक वातावरण का सृजन कहानी को प्रभावपूर्ण और विश्वसनीय बनाता है।'' ''निर्वासित'' कहानी में लेखिका ने वृद्ध दम्पति के जीवन की उदासीनता, निराशा और पीड़ा आदि को अधिक धनीभूत करने के लिए जेठ—बैसाख की उजाड़ दोपहरी झुलसाती लू, अजीब सी उब मनुहसियत भरा वातावरण आदि को यथार्थ में चित्रित किया है। सामाजिक वातावरण में पड़ोसियों की बातचीत, अफसर बेटे के नौकर सहायक मित्र, पार्टी आदि सब मिलकर वातावरण को सजीव बना देते हैं।

प्रश्नः— 7 बुजुर्गों के प्रति युवा पीढ़ी का क्या नजरिया होता है ? युवा वर्ग और बुजुर्गो की सोच और व्यवहार में अंतर को स्पष्ट करें। इस अंतर को किस प्रकार दूर किया जा सकता है ?

उत्तर प्रत्येक संतान की सफलता—असफलता एवं चरित्र निर्माण में माता—पिता के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। संतान की सफलता और असफलता दोनों में ही माता—पिता का योगदान महत्वपूर्ण होता है। अतः युवकों के लिए बुजुर्गों का बहुत महत्व है किन्तु आज का युवा कुछ भिन्न प्रकार की सोच रखता है वह सफलता का श्रेय सिर्फ अपनी मेहनत और लग्न को देता है और असफलता के लिए बुजुर्गों को दोषी ठहराता है आज के युवा के लिए बुजुर्ग व्यक्ति घर में रखी ऐसी मूर्ति के समान होता है जिसे दो वक्त की रोटी कपड़ा और दवा की जरूरत होती है। उसके नजरिए के अनुसार बुजुर्ग लोग अपना जीवन जी चुके होते है उनकी आवश्यकताएँ और भावनाएँ महत्वपूर्ण नहीं होती।

आज का युवा अपने बुजुर्गों के कठोर अनुशासन पसंद व्यक्तित्व के आगे नहीं झुकता, सिर्फ बुजुर्ग होने के कारण उनकी तर्कहीन बातों को स्वीकार कर लेना उसके लिए असहनीय होता है। उन्हें भी आज की पीढ़ी का व्यवहार उद्दण्डता पूर्ण प्रतीत होता है। समाज में आ रहे बदलाव उन्हें विचलित करते है। इन सब मतभेदों को दूर करने के लिए दोनों ही पीढ़ियों को आपसी सामंजस्य की जरूरत है।

शेखावाटी मिशन—100

सुभाष चन्द्र बोस

प्रश्नः– 1 सुभाष बाबू की मातृभाषा थी ?

उत्तर बांग्ला

प्रश्नः– 2 सुभाष बाबू के त्याग पत्र का स्वागत किसने किया ?

उत्तर देशबंधु चितरंजन दास ने

प्रश्नः– 3 सैनिकों के लिए सुभाष बाबू ने कौनसे तीन आदर्श बताए ?

उत्तर सैनिकों के लिए सुभाष बाबू ने निष्ठा, कर्त्तव्य और बलिदान ये तीन आदर्श बताए।

प्रश्नः– 4 कटक से आये संन्यासी ने कौन–सी तीन बातें बताई ?

उत्तर (अ) निरामिष भोजन

(ब) नियमित मंत्र पाठ करना

(स) नियमित माता–पिता के चरण स्पर्श करना

प्रश्नः– 5 गुण्डे हैदर का ह्रदय परिवर्तन कैसे हुआ ?

उत्तर सुभाष बाबू कटक में अपने साथियों को लेकर हैजा पीड़ित लोगों की सेवा करते थे हैदर एक कुख्यात बदमाश था जो प्रतिदिन सुभाष बाबू के कार्य में बाधा डालता था। एक दिन हैजे ने हैदर के परिवार को भी चपेट में ले लिया परंतु उसके गलत व्यवहार के कारण किसी भी चिकित्सक ने उसका इलाज नहीं किया तब सुभाष बाबू ने अपने मित्रों के साथ मिलकर उसके घर की सफाई की। घरवालों का इलाज किया। इन सबको देखकर हैदर का ह्रदय बदल गया उसने सुभाष बाबू से अपने व्यवहार के प्रति क्षमायाचना की।

प्रश्नः– 6 सुभाष बाबू ने मांडले जेल के वातावरण का वर्णन किस प्रकार किया है ?

उत्तर सुभाष बाबू ने मांडले जेल के वातावरण का वर्णन करते हुए कहा है कि वहाँ चारों और धूल ही धूल थी। मांडले जेल की वायु भी धूल युक्त थी, जिसके कारण सांस के साथ धूल अंदर जाती थी। इतना ही नहीं भोजन भी धूलधूसरित हो जाता था। जब यहाँ धूल भरी आंधियाँ चलती थी तो दूर–दूर तक के पेड़ और पहाड़ियां सब ढ़क जाती थी। उस समय धूल के पूर्ण सौन्दर्य के दर्शन होते थे। सुभाष बाबू ने इसी धूल को दूसरा परमेश्वर कहा है।

प्रश्नः– 7 सुभाष बाबू को साधु जीवन से घृणा क्यों हो गई ?

उत्तर कॉलेज से निकाल दिए जाने के बाद सुभाष बाबू का ध्यान योगाभ्यास और अध्यात्म की ओर लग रहा था। सुभाष बाबू ऐसे सच्चे योगी की तलाश में थे जो उन्हें अध्यात्म की शिक्षा प्रदान कर सकें। एक दिन वे घर से निकल गये और अनेक तीर्थों में जाकर महात्माओं से मिले, परंतु उन्हें कोई सच्चा योगी नहीं मिला। उन्होंने देखा कि हजारों साधु गांजा, भांग और दूसरे नशे में चूर रहकर जीवन की अमूल्य घड़ियां व्यर्थ खो रहे हैं यह देखकर उन्हें साधु जीवन से घृणा हो गई और वे घर लौट आए।

प्रश्नः– 8 राष्ट्रीय एकता पर विचार व्यक्त करते हुए नेताजी सुभाष चन्द्र ने क्या कहा ?

उत्तर राष्ट्रीय एकता पर बोलते हुए नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने स्पष्ट किया कि स्वतंत्र हो जाने पर यदि हम एक राष्ट्र के रूप में संगठित होना चाहते हैं तो हमें यथार्थ में कठोर परिश्रम करना होगा। राष्ट्रीय एकता और संगठन को विकसित करने के लिए अनेक बातों की आवश्यकता है। यथा–एक सामान्य भाषा, एक सामान्य वेशभूषा, एक सामान्य आहार इत्यादि इसके लिए हमें काफी प्रयास करना होगा।

प्रश्नः– 9 नारी सामर्थ्य के संदर्भ में सुभाष के क्या विचार थे ?

उत्तर सुभाष चन्द्र बोस ने कहा कि मैं भारतीय नारी में सामर्थ्य से भली भांति परिचित हूँ इसलिए ऐसा कोई कार्य नहीं जिसे हमारी नारियाँ नहीं कर सकती। मैं वीर नारियों की एक ऐसी सैनिक टुकड़ी चाहता हूँ जो मृत्यु से जूझने वाली रेजिमेंट बनाये और उस तलवार को उठाएं जो कि 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की वीर नारी ने उठाई थी।

प्रश्नः– 10 ''अपने निःस्वार्थ कार्यो से किसी के भी व्यक्तित्व में परिवर्तन लाया जा सकता है'' इस कथन की व्याख्या ''सुभाष चंद्र बोस'' संकलित पाठ के आधार पर कीजिए।

उत्तर सुभाष बाबू जब नगर में हैजा फैलने पर अपने साथियों के साथ गंदी बस्ती की सफाई करते व रोगियों की देखभाल करते थे तब कुछ लोग उनका विरोध करते थे जिनमें हैदर नाम का गुण्डा भी था लेकिन जब हैदर का परिवार चपेट में आया तब सुभाष बाबू व उनके साथियों ने हैदर के घर की सफाई व दवा की व्यवस्था की। इस पर हैदर का ह्रदय परिवर्तन हो गया और वह सुभाष बाबू का प्रशंसक बन गया।

प्रश्नः— 11 विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेने की प्रेरणा देते हुए सुभाष बाबू ने क्या कहा ? समझाइये।

उत्तर सुभाष बाबू ने विद्यार्थियों से कहा कि उन्हें खुलकर देश की राजनीति में भाग लेना चाहिए। एक पराधीन राष्ट्र में मूलतः एवं प्रमुखतः गतिविधियाँ राजनीतिक ही होती है अतः देश के पढ़े–लिखे युवा वर्ग को राजनीति में भाग लेना चाहिए।

सुभाष बाबू ने कहा कि जब किसी स्वाधीन राष्ट्र के विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है तो पराधीन राष्ट्र के विद्यार्थियों को तो आवश्यक रूप से राजनीति में भाग लेना चाहिए।

प्रश्नः— 12 ''मेरे मन में दो संशय थे'' सुभाष बाबू के मन में कौन से दो संशय थे ?

उत्तर प्रथम तो यह कि सांसारिक जीवन की ओर सुभाष बाबू के मन में आकर्षण आता था परंतु आत्मा उसको स्वीकार नहीं करती थी। दूसरा यह कि सुभाष बाबू के मन में भोग की चेतना पैदा होने लगी जो कि स्वाभाविक थी, लेकिन सुभाष बाबू की आत्मा उसे अनैतिक मानती थी।

सर जगदीश चंद्र बोस

प्रश्नः— 1 सर जगदीश चंद्र बोस ने हमारी राष्ट्रीय संस्कृति का सार क्या बतलाया है ?

उत्तर हमारी राष्ट्रीय संस्कृति का सार ही यह है कि हमें ज्ञान का प्रयोग केवल अपने लाभ के लिए करने की संस्कृतिहीनता से सदैव दूर रहना चाहिए ।

प्रश्नः— 2 वनस्पति जगत् के जीवन की अविभाज्य एकता तथा गति दर्शाने वाले यंत्र का नाम लिखिए।

उत्तर क्रेस्कोग्राफ।

प्रश्नः— 3 जे.सी. बोस के अन्तरंग कवि मित्र का नाम लिखिए।

उत्तर रविन्द्र नाथ टैगोर।

प्रश्नः— 4 जगदीश चन्द्र बोस के आत्मकथांश का मूल स्वर क्या है ?

उत्तर जगदीश चन्द बोस के समष्टि मूलक उदार विचार तथा जड़ चेतन के प्रति एकात्मक भाव तथा संवेदना वर्तमान विश्व के प्रस्तर तुल्य जीवन में स्नेह व सरसता का संचार करेगी।

प्रश्नः— 5 संसार को अपनी विजय के अनुभव का फल कौन प्रदान करता है ?

उत्तर जिसने संघर्ष कर विजय प्राप्त की हो।

प्रश्नः— 6 बोस के क्रेस्कोग्राफ की क्या विशेषता है ? लिखिए।

उत्तर जगदीश चन्द्र बोस द्वारा आविष्कृत क्रेस्कोग्राफ से पौधों में होने वाली सूक्ष्म से सूक्ष्म जैविक क्रिया स्पष्ट दिखाई देती थी। इसकी परिवर्धन क्षमता एक करोड़ गुणा है। इस खोज के माध्यम से बड़े से बड़े पेड़ को आसानी से स्थानान्तरित किया जा सकता है। इसी द्वारा यह सिद्ध हुआ की पौधों का स्नायु तंत्र होता है। इस आविष्कार के माध्यम से सिद्ध हुआ की पेड़–पौधों में भी संवेदनशील स्नायुतंत्र होता है। उनका जीवन भी विभिन्न भावनाओं से परिपूर्ण होता है। वे भी प्रेम, घृणा, आनंद, भय, सुख–दुख, चोट, दर्द आदि अन्य उत्तेजनाओं के प्रति संवेदनशील होते है। अन्य प्राणियों के समान ही प्रतिक्रिया भावानुभूति पेड़ पौधों में भी होती है।

प्रश्नः— 7 सर बोस के किन शब्दों को सुनकर योगानंद जी आँखे भर आई ?

उत्तर सर ने अपने वक्तव्य के अंत में कहा कि विज्ञान न तो पूर्व का है न पश्चिम का बल्कि अपनी सार्वभौमिकता व सार्वलौकिकता के कारण सभी देशों का है। परंतु फिर भी भारत इसके विकास में योगदान देने के लिए विशेष रूप से योग्य भारतीयों की ज्वलंत कल्पना शक्ति तो ऊपर–ऊपर परस्पर विरोधी लगने वाले तथ्यों की गुत्थी से भी नया सूत्र निकाल सकती है। परंतु एकाग्रता की आदत ने इसको रोक रखा है। संयम मन को अनंत धीरज के साथ सत्य की खोज में लगाए रखने की शक्ति प्रदान करता है। उनके इन शब्दों को सुनकर योगानंद जी की आँखे भर आई।

प्रश्नः— 8 प्रयोगशाला में फर्न के पौधे पर बोस द्वारा किये गये प्रयोग का वर्णन कीजिए।

उत्तर जगदीश चंद्र बोस ने योगानंद जी के समक्ष फर्न के पौधे को क्रेस्कोग्राफ यंत्र लगाकर दिखाया जिससे उसकी गतिविधि अनेक गुना परिवर्धित दिखाई दी। जब बोस ने पौधे की नोक को धातु की एक छड़ से छुआ तो फर्न के पौधे को मूक नृत्य हठात् रूक गया, जैसे ही छड़ को हटाया गया तो पुनः उसकी लयबद्ध थिरकन शुरू हो गयी।

इसी प्रकार उन्होंने फर्न के पौधे पर क्लोरोफार्म का प्रभाव दिखाया, उसके प्रभाव को नष्ट करने वाली औषधि से पुनः हलचल को दिखाया और अंत में तीक्ष्ण औजार से चोट पहुंचाकर उसकी मृत्यु की स्तब्धता भी क्रेस्कोग्राफ द्वारा दिखाई।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्नः— 9 जगदीश चंद्र बोस ने एक वैज्ञानिक के जीवन को अनन्त संघर्ष से भरा हुआ क्यों माना है ?

उत्तर सामान्यतः लोगों में एक धर्म शास्त्रीय पूर्वाग्रह कार्यरत रहता है जो अज्ञान को भी धर्म के समान प्रश्नातीत मानता है। प्रायः वैज्ञानिक लोगों की गलतफहमियों का शिकार बने रहते है। वे लाभ और हानि, सफलता और विफलता को एक समान मानते हुए अपना जीवन प्रेम और श्रद्धा से व्यतीत करने को विवश होते हैं।

भोर का तारा

प्रश्नः— 1 देवदत्त कौन था ?

उत्तर सम्राट स्कंदगुप्त का मंत्री और एकांकी की नायिका छाया का भाई था।

प्रश्नः— 2 माधव ने शेखर को तक्षशिला से आकर क्या सूचना दी ?

उत्तर हूणों का सरदार तोरमाण भारतवर्ष पर चढ़ आया है। उसने सिंधु नदी को पार कर अम्भी राज्य को नष्ट कर दिया है, उसकी सेना तक्षशिला को पैरों तले रौंद रही है।

प्रश्नः— 3 शेखर ने अपने जीवन में कौनसी दो साधनाएँ बताई ?

उत्तर (अ) छाया का प्यार (ब) उसकी कविता

प्रश्नः— 4 ''भोर का तारा'' एकांकी का मूलभाव या उद्‌देश्य लिखिए।

उत्तर यह जगदीश चंद्र माथुर की एक ऐतिहासिक एकांकी है जिसमें लेखक ने व्यक्तिगत प्रेम और सौन्दर्य को त्यागकर, राजधर्म के निर्वाह हेतु लोकमन में राष्ट्र प्रेम का भाव जगाया है और बलिदान की प्रेरणा दी है।

प्रश्नः— 5 शेखर को राजकवि क्यों बनाया गया ?

उत्तर युवती छाया ने एक उत्सव के मौके पर राज दरबार में बहुत ही सुंदर गीत गाया जब राजा द्वारा गीत के रचनाकार का नाम पूछा गया तो युवती ने शेखर नाम बताया और उसे राजकवि बनाने की बात कहीं। छाया की बात मानकर एवं उसके रचित गीत से प्रभावित होकर शेखर को राजकवि बनाया गया।

प्रश्नः— 6 ''देश तुमसे यह बलिदान मांगता है'' का आशय स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर यह वाक्य माधव ने शेखर को उस समय कहा जब हूणों के सरदार ने तक्षशिला पर आक्रमण कर दिया था। तब माधव ने शेखर से आग्रह किया की वो अपनी वाणी की ओजस्विता एवं प्रखरता के बल पर देशवासियों में राष्ट्रप्रेम का भाव जाग्रत कर अपने कवि धर्म का पालन करें।

माधव ने शेखर से आग्रह किया कि वो अपने निजी हित को भूलकर देश के युवकों की सोई आत्माओं में जान फूंक कर उनको मातृभूमि के लिए लड़ने के लिए प्रेरित करें। देश उनसे यहीं बलिदान मांगता है।

प्रश्नः— 7 ''भोर का तारा'' एकांकी में किस पात्र ने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया ? सकारण लिखो।

अथवा

''भोर का तारा'' एकांकी का नायक कौन है ? उसका चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर ''भोर का तारा'' एकांकी का नायक शेखर है। वह सच्चा प्रेम, कर्त्तव्य के प्रति त्याग को तत्पर रहने वाला युवक है। उसने हमें सबसे ज्यादा प्रभावित किया है।

उसके चरित्र की निम्न विशेषताएँ है :—

(अ) सहृदय कवि :— शेखर प्रकृति के हर तत्व में कविता को देखता है। उसे राजपथ पर भीख मांगने वाली स्त्री में भी कला दिखाई देती है यह उसकी सहृदयता का परिचायक है।

(ब) भावकु व्यक्ति :— शेखर एक भावुक व्यक्ति है। वह अपने भावों को अपनी कविता के माध्यम से प्रकट करता है।

(स) सच्चा प्रेमी :— शेखर एक सच्चा प्रेमी है। वह छाया और अपने बीच के अंतर को जानता है और सदैव सीमा में रहकर छाया से प्रेम करता है।

(द) राजभक्त :— राजकवि नियुक्त होने पर वह अपने कवि कर्म के द्वारा राजा को प्रसन्न करता है। वह राष्ट्र पर संकट आने पर व्यक्तिगत प्रेम संबंधी रचना को जलाकर राष्ट्र प्रेम की अलख जगाता है।

शेखावाटी मिशन—100

प्रश्नः— 8 तक्षशिला से लौटकर माधव शेखर से क्या याचना करता है ?

अथवा

गुप्त साम्राज्य संकट में है और हमें घर—घर भीख मांगनी पड़ेगी। ऐसा किसने और क्यों कहा ?

उत्तर तक्षशिला से लौटकर माधव शेखर और छाया से अपने कर्त्तव्य का पालन की बात करते हुए राष्ट्र पर आये संकट के बारे में बताता है।

राष्ट्र पर आये भयंकर संकट से मुक्ति के लिए माधव कहता है शेखर, छाया में तुमसे भीख मांगता हूँ सम्राट स्कन्दगुप्त की, साम्राज्य की, देश की इस संकट के समय में मदद करों। माधव कहता है कि शेखर तुम्हारी वाणी में ओज है और तुम्हारे स्वर में प्रभाव है। तुम अपने शब्दों के बल पर सोई आत्माओं को जगा सकते हो, युवकों में नई जान फूंक सकते हों।

प्रश्नः— 9 ''निज प्रेम पर स्वदेश प्रेम की महता है'' ''भोर का तारा'' एंकाकी के आधार पर उपर्युक्त कथन की व्याख्या कीजिए।

अथवा

भोर का तारा एक निजी प्रेम—प्रधान एकांकी है या देश प्रेम प्रधान एकांकी ? कारण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर भोर का तारा एकांकी आरम्भ से मध्य तक निजी प्रेम से परिपूर्ण एकांकी प्रतीत होता है। जिसका नायक शेखर अपने प्रेमिका से प्रेरित होकर काव्य रचना करता है। लेकिन अपने मित्र माधव द्वारा यह सूचना पाकर कि भारत में हूणों ने आक्रमण कर दिया है उसका राष्ट्र संकट में है तो वह अपने प्रेम ग्रंथ को अग्नि के हवाले करके राष्ट्र प्रेम का भाव ह्रदय में लेकर युवाओं को राष्ट्रहित में जाग्रत करने के लिए ओज से परिपूर्ण गीतों की रचना करता है। अपने प्रेम ग्रन्थ को जलाकर अपनी मातृ भूमि के प्रति कर्त्तव्य निर्वहन का दायित्व बोध होना निज प्रेम पर स्वदेश प्रेम की महत्ता है।

गेहूँ बनाम गुलाब (रामवृक्ष बेनीपूरी)

प्रश्नः— 1 मानव को मानव किसने बनाया ?

उत्तर लेखक के अनुसार मानव को मानव गुलाब ने अर्थात् मानव की भावनात्मक एवं सांस्कृतिक प्रवृति ने बनाया।

प्रश्नः— 2 लेखक के अनुसार हम आने वाली दुनिया को कौनसी दुनिया कहेंगे ?

उत्तर गुलाब की दुनिया अर्थात् सांस्कृतिक दुनिया कहेगें।

प्रश्नः— 3 लेखक के अनुसार राक्षसता क्या है ?

अथवा

प्रचुरता में भी राक्षसता न आवे। इसके लिए बेनीपुरी जी ने क्या उपाय बताये हैं ?

उत्तर लेखक के अनुसार राक्षसता भौतिक सुख सुविधाओं की प्रचुरता में निवास करती है। भौतिक सुविधाओं में अत्यधिक वृद्धि के कारण राक्षसता की प्रवृति मानव का शोषण करती है। मानव की आर्थिक उन्नति के कारण उसमें अनेक बुराइयां आ जाती है जो उसकी दूषित मानसिक प्रवृतियों का प्रतीक है। प्रचुरता में भी राक्षसता न आवें इसके लिए लेखक ने वृतियों को वश में करने व उन्हें उध्र्वगामी बनाने का उपाय बताया है। इंद्रियों के संयमन व वृत्तियों का उन्नयन करके एवं अपनी स्थूल वासनाओं के क्षेत्र से उपर उठकर मानव देवत्व प्राप्त कर सकता है। इन उपायों को अपनाकर मानव प्रचुरता में भी राक्षसता से बच सकता है।

प्रश्नः— 4 गेहूँ और गुलाब की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कर लेखक के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर गेहूँ बनाम गुलाब निबन्ध में बेनीपुरी जी ने सर्वप्रथम गेहूँ को भूख शांत करने वाले अनाज व श्रम का प्रतीक माना है। गुलाब मानसिक तृप्ति व विलासिता का सूचक है। बेनीपुरी जी का उद्देश्य मानव जीवन में गेहू और गुलाब में संतुलन बनाये रखने का है। अर्थात् मानव अपने इन्द्रियों के संयमन व वृतियों के उन्नयन द्वारा श्रेष्ठ मानव बनकर भौतिक जगत की बुराईयों को दूर कर सकता है।

प्रश्नः— 5 ''गेहूँ बनाम गुलाब'' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि लेखक ने दूषित मानसिकता वालों को क्या संज्ञा दी है और क्यों ?

उत्तर लेखक ने दूषित मानसिकता वालों को राक्षसता का नाम दिया हैं यह राक्षसता भौतिक समृद्धि की वजह से पैदा होती है जो मानव का शोषण व उत्पीड़न करती है उसे गुलाम बनाती है। राक्षसता से विलासिता बढ़ती है। जिससे वह हमेशा अवांछित वस्तुओं के उपभोग हेतु लालायित रहता है।

प्रश्नः— 6 ''शौक—ए—दीदार अगर है, तो नजर पैदा कर'' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर निबन्धकार रामवृक्ष बेनीपूरी ने मशहूर शायर आकीर मीनाई का यह शेर उद्धृत किया है —

''कौनसी जां है जहाँ जलवाए माशूक नहीं'' शौक —ए—दीदार अगर है तो नजर पैदा करें''

लेखक ने इस उदाहरण से मानव को एक संदेश दिया कि संसार में सब जगह सौन्दर्य और आनन्द की सृष्टि विद्यमान है, उसे देखने के लिए माकूल भावनाओं की जरूरत है।

जिन आँखों पर भौतिकता का पर्दा पड़ा होता है वे अलौकिक दृश्य को नहीं देख सकते। अतः उन्हें इसी लोक में अलौकिक सौन्दर्य के दर्शन करने है तो ऐसी दृष्टि भी उत्पन्न करनी चाहिए।

प्रश्नः— 7 गेहूँ और गुलाब के मध्य संतुलन के समय मानव की स्थिति कैसी थी ?

उत्तर गेहूँ व गुलाब के मध्य संतुलन के समय मानव सुखी और सानन्द रहा। वह कमाता हुआ गाता था और गाता हुआ कमाता था वह प्रसन्न व सुखी था। उसके जीवन में सजीव व श्रम दोनों आपस में जुड़े हुए थे अर्थात् वह मानसिक व शारीरिक दानों ही पक्षों में पूर्ण संतुष्ट था।

सरयू पद्य भाग

अंक — 16

पाठ — 1 कबीर

प्रश्नः— 1 कबीर की रचनाएँ किस ग्रन्थ में संकलित है तथा कौनसी भाषा है ?

उत्तर कबीर की रचनाएँ बीजक ग्रन्थ में संकलित है तथा पंचमेल खिचड़ी अथवा सधुक्कड़ी में रचित है।

प्रश्नः— 2 कबीर अपने प्रियतम को नेत्रो में क्यों बंद कर लेना चाहते है ?

उत्तर वह चाहते हैं कि उन दोनो के बीच कोई तीसरा न आए । न वह किसी और को देखे तथा न प्रिय भी किसी और को देखें ।

प्रश्नः—3 तेरे ही नालि सरोवर पानी में तेरे किसके लिए कहा गया है ?

उत्तर तेरे शब्द का प्रयोग 'नलिनी' अर्थात जीवात्मा के लिए किया गया है ।

प्रश्नः—4 कबीर ने संसार की तुलना 'सेंवल' के फूल से क्यों की है ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर सेंवल के वृक्ष पर लाल रंग के फूल आते हैं । ये देखने में सुन्दर होते हैं । कहा जाता है कि तोता इसे कोई मधुर फल समझकर इनके पकने की प्रतीक्षा करता है । पकने पर तोता अब इसे चखने को चोंच चलाता है तो इसके अन्दर से रूई जैसा नीरस पदार्थ निकल पड़ता है। बेचारा तोता ठगा सा रह जाता है । कबीर के अनुसार मनुष्य को भी सांसारिक सुख बाहर से बड़े आकर्षक एवं प्रिय लगते है लेकिन इनका परिणाम भी निराशा जनक और दुःखदायी होता है। यह संसार भी सेंवल फूल की तरह केवल बाह्रय रूप में आकर्षक है।

प्रश्नः—5 कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा जाता है ?

उत्तर कबीर ने जो कहा वो उनके जीवन के अनुभव पर आधारित है । उन्होने सुनी—सुनाई बातों पर नहीं लिखा है । उन्होने अपनी आँखों से जो देखा है वही अपने दोहो में वर्णित किया है। आँखो देखा होने के कारण उसे साक्ष्य अर्थात साखी कहा गया है।

प्रश्नः—6 गुरू गोविन्द तो एक है पंक्ति मे कबीर के मन्तव्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कबीर मानते है कि गुरू ईश्वर एक हैं तथा दोनो में कोई अन्तर नहीं है। गुरू धरती पर ईश्वर का ही दुसरा रूप है । गुरू ईश्वर की सच्ची कृपा होने पर मनुष्य को प्राप्त होता है तथा गुरू की कृपा से ही सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है।

प्रश्नः—7 कबीर के अनुसार मुर्ख का साथ क्यों नहीं करना चाहिए ?

उत्तर मनुष्य जिसकी भी संगति में रहता है उसी के जैसा हो जाता है संगति के प्रभाव से बच पाना बहुत कठिन है। संगति के प्रभाव का प्रमाण स्वाति नक्षत्र में बरसने वाली बूंद के परिणाम में देखा जा सकता है । एक ही बूंद केले, सीप और सर्प के मुख पर पड़ने पर क्रमशः कपूर, मोती और विष बन जाती है । अतः व्यक्ति को कभी भी मुर्ख का साथ नहीं करना चाहिए।

प्रश्नः—8 काहे री नलिनी तूँ कुम्हलानी ।

तेरे ही नालि सरोवर पानी।।

उपर्युक्त पंक्ति में नलिनी एवं सरोवर किस प्रतीक रूप में प्रयुक्त हुए है ?

उत्तर उपर्युक्त पंक्ति में नलिनी जीवात्मा के लिए एवं सरोवर परमात्मा के प्रतीक रूप में प्रयुक्त हुए है।

प्रश्नः— 9 कबीर ने किसका चिंतन करने को कहा है

उत्तर कबीर ने केवल हरिनाम का चिंतन करने को कहा है।

प्रश्नः—10 संतो, भाई आई ज्ञान की आँधी रे । पद में कबीर क्या संदेश देना चाहते है ?

उत्तर कबीर भले ही घोषणा करते हो कि उन्होने मसि—कागद तौ छुऔ नहिं, कलम गही ना हाथ, परन्तु उन्होने अपनी बात सटीक प्रतीको और रूपकों द्वारा कहने में पूर्ण निपुणंता दिखाई है । उपर्युक्त पद में कवि कबीर ने ज्ञान की महत्ता को आलंकारिक शैली में प्रस्तुत किया है। उनकी मान्यता है कि स्वभाव के सारे दुर्गुणों से मुक्ति पाने के लिए ज्ञान से बढ़कर और कोई दवा नहीं है। जब ह्रदय में ज्ञानरूपी आँधी आती है तो सारे दुर्गुण एक — एक करके धराशायी होते चले जाते है और अंत में साधक का ह्रदय प्रेम की रिमझिम वर्षा से भीग उठता है । ज्ञान रूपी सूर्य का उदय होता है और अज्ञान का अंधकार विलीन हो जाता है । ज्ञान प्राप्ति की साधना का यही संदेश इस पद द्वारा कबीर ने दिया है।

प्रश्नः—11 'जल में उत्पति जल में वास, जल में नलिनी तोर निवास पंक्ति का मूल भाव लिखिए।

उत्तर उपर्युक्त पंक्ति कबीर के पद काहे री नलिनी तू कुम्हलानि से लिया गया है। इस पद में कबीर ने नलिनी (कमलीनी) को जीवात्मा का और सरोवर के जल को परमात्मा का प्रतीक माना है । वह कमलिनी रूपी अपनी आत्मा से प्रश्न करते हैं कि अरे नलिनी तू क्यों मुरझाई हुई है? तेरे चारों और तथा तेरे नाल में सरोवर का जल (परमात्मा) है। तेरी उत्पति और निवास भी इसी सरोवर में है निरंतर इसी सरोवर रूपी परमात्मा में तू स्थित है। भाव यह है कि कमलिनी को यदि जल न मिले तो वह कुम्हला जाएगी परन्तु जब भीतर बाहर दोनो और जल ही है तो मुरझाने का क्या कारण हो सकता है । इसका एक मात्र कारण यही हो सकता है कि कमलिनी का किसी अन्य (सांसारिक) विषय—वासनाओं से प्रेम हो गया है और उसी की वियोग में वह दुःखी और मुरझाई है।

पाठ — 2

तुलसीदास — मंदोदरी को रावण को सीख

प्रश्नः—1 मंदोदरी ने सीता को किसके समान माना ?

उत्तर मंदोदरी ने सीता को रावण के वंश रूपी कमल समूह को नष्ट कर देने वाली शीत ऋतु की रात्रि के समान माना है।

प्रश्नः—2 रावण को सीता हरण के लिए किसने उकसाया ?

उत्तर शूर्पनखा ने

प्रश्नः—3 मंदोदरी की रावण को सीख प्रसंग कहाँ से संकलित किया गया है ?

उत्तर यह प्रसंग तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस महाकाव्य के सुन्दरकांड तथा लंकाकांड से संकलित है।

प्रश्नः—4 मंदोदरी का सौभाग्य कब सुरक्षित होता है ?

उत्तर जब रावण मंदोदरी की सीख मानकर राम से बैर को त्याग कर, उनका भजन करता है तभी मंदोदरी का सौभाग्य सुरक्षित रहता है।

प्रश्नः—5 रावण के मन में ज्ञान क्यों नहीं उत्पन हो रहा था?

उत्तर क्योंकि मंदोदरी के अनुसार काल के वश में होने के कारण सच्चाई को नहीं समझ पा रहा था।

प्रश्नः—6 रावण द्वारा मंदोदरी की सीख न मानने का क्या परिणाम हुआ ?

उत्तर मंदोदरी की सीख न मानने के कारण रावण युद्ध में राम के द्वारा मारा गया और उसके लिए कुल में कोई रोने वाला भी नहीं बचा।

प्रश्नः—7 मंदोदरी ने राम के बाणों और राक्षसों को किसके समान बताया ?

उत्तर मंदोदरी ने राम के बाण सर्पो के समूह के समान और राक्षसों को मेढ़को के समान बताया।

प्रश्नः—8 रावण ने पत्नी मंदोदरी की सीख क्यों नहीं मानी ?

उत्तर अपने बल के अंहकार में डूबे होने से तथा राम को साधारण मनुष्य मानने के कारण रावण ने मंदोदरी की सीख नहीं मानी ।

प्रश्नः—9 तुलसीदास जी ने श्रीराम और रावण में किस प्रकार का अंतर बताया है ?

उत्तर कवि ने श्रीराम को सूर्य के समान तेजस्वी और रावण को जुगनू के समान बताया है।

शेखावाटी मिशन—100

प्रश्नः–10 रावण ओर मंदोदरी के चरित्र का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

उत्तर रावण और मंदोदरी के चरित्र एक दूसरे के विपरीत है रावण एक अंहकारी, हठी, युद्ध पिपासु, नीतिविरूद्ध आचरण करने वाला विलासी और पराक्रमी योद्धा है । उसे अपने बल और वीरता पर बड़ा घमंड है । अपने मुख से अपनी प्रशंसा करने में हितकारी परिजनों की सीख न सुनकर उन्हें अपमानित करने में तनिक भी संकोच नहीं होता ।

इसके विपरीत मंदोदरी एक विनम्र, पति का हित चाहने वाली, उचित सीख और परामर्श देने वाली तथा अपने सौभाग्य की अखण्डता के लिए चिंतित रहने वाली पत्नी है। वह अपने पति को अनुचित और अनैतिक कार्यो मे रत रहने से रोक तो नहीं पाती किन्तु एक पति हित चाहने वाली पत्नी के नाते उसे समझाने में कभी पीछे नहीं रहती । मंदोदरी एक बुद्धिमती, विवेकशील भविष्य को पढ़ने वाली और सजग सहधर्मिणी है। वह एक विदुषी नारी है।

पाठ – 3

रहीम

प्रश्नः–1 अकबर ने रहीम से प्रभावित होकर उन्हें कौन सी उपाधि दी थी ?

उत्तरः– मिर्जा खान

प्रश्नः–2 विपत्ति –कसौटी में कौनसा अलंकार है ?

उत्तरः– रूपक अलंकार

प्रश्नः–3 रहीम ने गंगा माता से क्या चाहा है ?

उत्तरः– रहीम ने गंगा से प्रार्थना की है कि वह उनको 'हरि' न बनाकर शिव का मस्तक बना दें।

प्रश्नः–4 'रहिमन पानी राखिए' में कौन – सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः– 'रहिमन पानी राखिए' में पानी शब्द का प्रयोग तो एक बार ही हुआ है लेकिन श्लेष अलंकार प्रयुक्त होने के कारण पानी शब्द का अर्थ मोती, मानुष तथा चून के लिए क्रमशः चमक, इज्जत एवं जल के अर्थ में हुआ है। अर्थात जहाँ काव्य में एक ही शब्द के प्रसंगानुसार भिन्न–भिन्न अर्थ प्रयुक्त होते हो, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

प्रश्नः–5 रहीम ने दीपक तथा कपूत की समता का वर्णन क्यों किया है ?

उत्तरः– रहीम ने कुपुत्र को दीपक के समान बताया है। दीपक जलने पर उजाला करता है तथा बुझने पर अंधेरा हो जाता है । उसी प्रकार पुत्र का जन्म होने पर परिवार में खुशियाँ मनाई जाती है। लेकिन वही पुत्र बड़ा होने पर अपने बुरे कार्यो के कारण अपमान का कारण बनता है तो परिवार में खुशियों के स्थान पर निराशा फैल जाती है।

प्रश्नः–6 रहीम दुष्ट लोगों से मित्रता व शत्रुता क्यों नहीं रखना चाहतें ?

उत्तरः– क्योंकि दुष्ट लोग विश्वसनीय नहीं होते है। उनसे शत्रुता या मित्रता दोनों ही हानिकारक हो सकती है। यदि हम ऐसे लोगों से शत्रुता रखेंगे तो वह हमें हानि पहुचाने के लिए घटिया से घटिया तरीके काम में ले सकते है। इसी प्रकार दुष्टों की मित्रता पर भी विश्वास करना बुद्धिमानी नहीं कहा जा सकता क्योंकि वे अपने स्वार्थ के लिए कभी भी विश्वास घात कर सकते है। कवि रहीम जी ने इस बात का प्रमाण कुत्ते के द्वारा मनुष्य के काटने एवं चाटने के माध्यम से दिया है।

प्रश्नः–7. कवि रहीम के अनुसार कौन – कौन सी बातें दबाने पर भी नहीं दबी रहती, प्रकट हो जाती है? स्पष्ट करते हुए लिखिए।

उत्तरः– कवि रहीम के अनुसार सात बाते ऐसी है जो दबाने से भी नहीं छिपी रहती है और सारा समाज उन्हे जान लेता है ये सात बातें क्रमशः इस प्रकार है कुशलता का होना, किसी की हत्या करना, खाँसी की बीमारी होना, मन में किसी कारण प्रसन्नता होना, किसी के प्रति शत्रुता अथवा प्रेम होना तथा शराब पीना या नशा करना आदि।

प्रश्नः–8 मथत–मथत माखन रहे, दही मही बिलगाय ।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय ।।
उपर्युक्त दोहे का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः– उपर्युक्त दोहे में कवि रहीम जी कहते है कि सच्चा मित्र सदा संकट में साथ निभाता है। सच्चे मित्र की पहचान यही है कि वह संकट आने पर कभी अपने मित्र का साथ नहीं छोड़ता । जिस प्रकार दही को बार–बार बिलोया जाता है तो दही और मट्ठा तो अलग हो जाते है किन्तु मक्खन वहीं स्थिर रहता है। तात्पर्य यह कि सच्चा मित्र मक्खन की तरह अपने मित्र के सदा साथ रहता है।

प्रश्नः–9 रहीम ने परोपकारी व्यक्ति की संगति करने के लिए क्यों कहा है ?

उत्तरः– क्योंकि ऐसा करने से यश मिलता है जैसे मेहन्दी बाँटने या पीसने वाले के हाथों पर मेहन्दी का रंग स्वयं चढ़ जाता है, परोपरकारी के साथ रहने से स्वयं को भी परोपकार करने की प्रवृति पड़ जाती है और संगति के कारण यश–लाभ प्राप्त होता है।

शेखावाटी मिशन–100

पाठ

श्यशोधरा/भारत की श्रेष्ठता – मैथिलीशरण गुप्ता

प्रश्नः–1 'यशोधरा' का काव्यरूप क्या है ?

उत्तरः– 'यशोधरा मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित खण्डकाव्य है।

प्रश्नः–2. ''दुःखी न हो इस जन के दुःख से'' पंक्ति में यशोधरा ने 'जन' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है।

उत्तरः– उपर्युक्त पंक्तियों में 'जन' शब्द का प्रयोग यशोधरा ने स्वयं अपने लिए किया है।

प्रश्नः–3 गौतम बुद्ध द्वारा यशोधरा को सोता हुआ छोड़कर जाने के पीछे क्या कारण है ?

उत्तरः– गौतम बुद्ध द्वारा यशोधरा को सोता हुआ छोड़कर जाने का मुख्य कारण वे उन्हे रोता नहीं देख सकते थे।

प्रश्नः–4 'भारत की श्रेष्ठता' कविता किस पुस्तक में संकलित है ?

उत्तरः– उपर्युक्त शीर्षक की कविता 'भारत–भारती' पुस्तक में संकलित है।

प्रश्नः–5 ''फिर भी क्या पूरा पहचाना'' किसने किसको पूरा नहीं पहचाना है ?

उत्तरः– गौतम बुद्ध ने अपनी पत्नी यशोधरा को पूरा नहीं पहचाना है।

प्रश्नः–6 'भारत की श्रेष्ठता' कविता की मूल संवेदना क्या है।

उत्तरः– इस कविता की मूल संवेदना यह है कि भारत के गौरवशाली अतीत का वर्णन करते हुए सोए हुए जनमानस में राष्ट्रीयता का भाव जगाना है।

प्रश्नः–7 भारतवर्ष अन्य देशों का सिरमौर क्यों है ?

उत्तरः– भारत संसार का सबसे प्राचीन देश है जहाँ ईश्वर ने सबसे पहले मानवसृष्टि का सर्जन किया और इस संसार की रचना की । भारत में ही समस्त ज्ञान–विज्ञान, कौशलों एंव कलाओं का जन्म स्थान रहा है। इस कारण भारत समस्त संसार में सिरमौर है।

प्रश्नः–8 ''हुआ न वह भी भाग्य–अभागा'' पंक्ति में यशोधरा ने स्वयं को अभागा क्यों कहा है ?

उत्तरः– क्योंकि यशोधरा बता रही है कि पत्नी का कर्तव्य है कि वह अपने पति के कर्तव्य पालन में सहयोगिनी बने । युद्ध भूमि के लिए अपने वीर पति को स्वयं विदा करना क्षत्राणी का धर्म है किन्तु उसको तो अपने पति को विदा करने का सौभाग्य भी प्राप्त न हो सका ।

प्रश्नः– 9 'यशोधरा' काव्य की विशेषआएँ लिखिए।

उत्तरः–
1. यशोधरा एक खण्ड काव्य है।
2. यह एक गीति–काव्य है।
3. इस काव्य में वियोग श्रृंगार रस है।
4. इस काव्य में बुद्ध के गृह त्याग के पश्चात यशोधरा की वेदना का मार्मिक चित्रण है।

प्रश्नः–10 ''मैथिलीशरण गुप्त का जीवन परिचय के बारे में लिखिए ?

उत्तर :– गुप्त जी द्विवेदी युग के सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतिनिधि कवि है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के चिरगांव (जिला झांसी) में सन् 1886 ई में हुआ । गुप्त जी की रचनाओं में राष्ट्रीयता, स्वदेश प्रेम ,युगीन चेतना और भारतीय संस्कृति की छाप पूरी तरह दिखाई देती है। देश एवं मातृभुमि के प्रति गर्व तथा गौरव, राष्ट्रीय जागरण से ओत–प्रोत भारत–भारती की कविताओं ने इन्हें राष्ट्र कवि के रूप में प्रतिष्ठित किया। इनकी रचनाओं में भारत–भारती, जयद्रथवध, पंचवटी, गुरूकुल, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर,जय भारत, सिद्धराज, विष्णुप्रिया आदि विशेष उल्लेखनीय है।

पाठ 8

राम की शक्ति पूजा (सुर्यकान्त त्रिपाठी निराला)

प्रश्न 1:– राम को शक्ति की उपासना करने का सुझाव किसने दिया?

उत्तर :– राम को शक्ति की उपासना करने का सुझाव जाम्बवंत ने दिया था।

प्रश्न 2:– राम की शक्ति –पूजा में निराला जी ने क्या संदेश दिया है?

उत्तर :– आशावाद का संदेश दिया है।

प्रश्न 3:– राम–रावण युद्ध किसका प्रतीक हैं ?

उत्तर :– राम–रावण युद्ध सत्य ओर असत्य के बीच चलने वाले संघर्ष का प्रतीक है।

प्रश्न 4:– 'आराधन का दृढ आराधन से दो उत्तर' पंक्ति का क्या तात्पर्य है?

उत्तर :– तात्पर्य यह है कि रावण द्वारा शक्ति की उपासना का उत्तर शक्ति की उपासना करके ही देना चाहिए।

प्रश्न 5:– ''यह है उपाय'' श्रीराम किस उपाय के बारे में बता रहे है?

उत्तर :– नील कमल के अभाव में जप पूर्ण कैसे हो, राम यही सोच रहे थे कि अचानक उन्हे याद आया कि बचपन में माता उन्हे राजीवनयन कहती थी। अतः राम ने सोचा क्यों न मेरा एक नेत्र निकाल के दुर्गा को अर्पित करू और जप को पूर्ण करके शक्ति की उपासना पूरी करूँ।

प्रश्न 6:– 'राम की शक्ति पुजा' काव्य से क्या प्रेरणा एवं सन्देश दिया है?

उत्तर :– राम की शक्ति पूजा के माध्यम से कवि ने यह संदेश दिया है कि अटूट निश्चय एवं प्रखर साधना से कठिन से कठिन कार्य को की भी साधा जा सकता है। मानवता को दानवता की शक्ति का सामना करने के लिये निरन्तर संघर्ष करने की प्रेरणा व्यक्त की गई है।

प्रश्न 7:– ''स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर–फिर संशय''पंक्ति के आधार पर राम की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर :– उपर्युक्त पंक्ति में राघवेन्द्र शब्द श्रीराम के लिये प्रयुक्त हुआ है। जब राम रावण से युद्ध करने के लिये समुद्र तट पहुंचते है और रावण के साथ महाशक्ति को पाकर उनका स्थिर मन बार बार हार की आशंका से भयभीत हो उठता है। राम विचलित होकर कहते है कि यह युद्ध नर वानर तथा रावण के बीच का नहीं है क्योंकि शक्ति तो रावण के साथ है इसलिए मेरी विजय कल्पना तो बेकार ही है।

प्रश्न 8:– 'हुआ देवी का त्वरित उदय' देवी का उदय किस कारण हुआ?

उत्तर :– श्रीराम ने जब जप को पूर्ण करने के लिये नील कमल के अभाव में अपनी एक आंख को निकालकर चढाने का निश्चय किया और तरकश से ब्रह्मशर निकाला तभी देवी का त्वरित उदय हुआ।

प्रश्न 9:– ''धिक जीवन को पाता आया विरोध'' प्रस्तुत पंक्ति के आधार पर राम की वेदना बताइए।

उत्तर :– श्री राम ने बचपन से ही जीवन के अन्तिम क्षणों तक विरोध को झेला है। उन्होने किशोरवस्था में वन में राक्षसों का विरोध, युवराज बनने पर माता कैकेयी का विरोध, महाशक्ति का रावण की ओर होना, महाशक्ति की माया से जप का कमल गायब होना तथा अन्तिम समय में सीता के चरित्र की परीक्षा लेना आदि ऐसे कारण रहे है जिससे राम को वेदना रूपी सागर में अत्यधिक कष्टों को झेलना पड़ा

पाठ–9

जयशंकर प्रसाद–पेशोला की प्रतिध्वनि

प्रश्न 1:– गौरव–सी काया किसकी पड़ी हैं

उत्तर :– गौरव– सी काया महाराणा प्रताप की पड़ी हैं

प्रश्न 2:– ''कौन थामता है पतवार ऐसे अँधड़ में '' प्रस्तुत पंक्ति में ' अँधड' का क्या अर्थ है?

उत्तर :– यहां 'अँधड' शब्द देश में व्याप्त अनाचार राष्ट्र तथा राष्ट्रीय संस्कृति तथा मूल्यों की उपेक्षा के वातावरण को 'अँधड़' कहा गया है।

प्रश्न 3:– 'काल–धीवर अनन्त में' पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

उत्तर :– उपर्युक्त पंक्ति में काल–चीवर में रूपक अलंकार है।

प्रश्न 4:– 'पेशाला की प्रतिध्वनि कविता में कौन–सा काव्य गुण है?

उत्तर :– इस कविता में ओज गुण है।

प्रश्न 5:– 'पेशालो की प्रतिध्वनि' कविता का मूल संदेश क्या है ?

उत्तर :– इस कविता का मूल संदेश राष्ट्र प्रेम है।

प्रश्न 6:– ''मैं हूँ–मेवाड़ मैं''–पंक्ति में 'मैं' शब्द किसकी और संकेत करता है?

उत्तर :– पंक्ति में ''मेवाड़'' भारत में अतीत की स्वाधीनता की भावना का प्रतीक तथा ''मैं'' शब्द सर्वनाम शब्द है जो भारतीय मनुष्य के लिये प्रयुक्त हुआ है।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 7:— ''श्रमित नमित—सा। पश्चिम के व्योम में है आज निरवलम्ब् सा'' कौन है ? तथा उसकी ऐसी दशा का क्या कारण है?

उत्तर :— पश्चिमी आकाश में अस्त होता हुआ सूर्य का बिम्ब है। कवि को लगता है कि वह थका हुआ झुका हुआ तथा बेसहारा हो गया हैं उसकी इस प्रकार की दशा होने का कारण यह है कि वह अस्त हो रहा है और उसका मध्यकालीन तेज अब नहीं रहा है, वैसे ही मेवाड़ के गौरव शाली अतीत की उपेक्षा देखकर भी वह थका सा और बेजान—सा प्रतीत हो रहा है।

प्रश्न 8:— 'दुन्दुभि—मृदंग—तूर्य शान्त—सब मौन है। फिर भी पुकार— सी है। गुँज रही व्योम में'' उक्त पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए?

उत्तर :— पेशोला झील के जल में महलों का प्रतिबिम्ब बन रहा है, उनमें कभी जीवन की जगमगाहट थी। उस समय हर समय महलों में संगीत की स्वर लहरी गुँजती थी। नगाड़ो, मृदंग तथा तुरही की मधुर ध्वनियां वहां के वातावरण में तैरती थी। लेकिन अब अतीत का वह वैभवपूर्ण वातावरण नहीं रहा। अब तो यह महल उसकी दुःखद याद में डुबे है फिर भी उनमें से उठकर एक पुकार आकाश में गुंजती है कि क्यो कोई वीर और साहसी उस प्राचीन गौरव को पुनः स्थापित करेगा।

पाठ 10 रामधारी सिंह दिनकर—कुरूक्षेत्र

प्रश्न 1:— कुरूक्षेत्र काव्य के अनुसार शान्ति का प्रथम न्यास है

उत्तर :— न्याय

प्रश्न 2:— वास्तव में युद्ध करने के लिये दोषी कौन है?

उत्तर :— युद्ध करने के लिये वास्तव में दोषी वह होता है जो अन्याय एवं ताकत से बनावटी शान्ति स्थापित करना चाहता है और जो न्यायोचित अधिकार मांगने पर भी न दे।

प्रश्न 3:— 'कुरूक्षेत्र' शीर्षक कविता में युद्ध और शान्ति पर किन किन के बीच विचार विमर्श हुआ है

उत्तर :— युधिष्ठिर और भीष्म के बीच

प्रश्न 4:— कुरूक्षेत्र किस श्रेणी का काव्य है?

उत्तर :— खण्डकाव्य

प्रश्न 5:— ''अहंकार या घृणा? कौन दोषी होगा उस रण का'' इसमें अहंकार और घृणा किसके प्रतीक बताये गया है?

उत्तर :— उपर्युक्त काव्य में अहंकार शोषक वर्ग का तथा घृणा शोषित वर्ग का प्रतीक है।

प्रश्न 6:— ''पौरूष का आतंक मनुज कोमल होकर खोता है'' इस पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :— यदि व्यक्ति क्षमाशील और विनम्र बना रहता है तथा अन्यायी के सामने और शक्ति का प्रदर्शन नहीं करता है तो उस स्थिति में उसके शौर्य, पराक्रम के आतंक से कोई भी नहीं डरता है। उस स्थिति में उसका पौरूष प्रभावहीन हो जाता है और हर कोई उसका अनादर करने लगता है।

प्रश्न 7:— कृत्रिम शांति और स्वाभाविक शांति में क्या अंतर है?

उत्तर :— कृत्रिम शांति केवल तलवार के बल पर ही स्थापित हो सकती है। कृत्रिम शांति शंका ग्रस्त रहती हैं। यह अस्थायी होती है ऐसी शान्ति अपने आप से डरती है। जबकि स्वाभाविक शांति व्यक्ति के मन में स्थापित होती है जो परस्पर विश्वास, श्रद्धा —भक्ति एवं आपसी प्रेम भाव व भाईचारे पर टिके रहती है। स्वाभाविक शांति स्थाई होती है। इसमें किसी प्रकार का कोई भय व्याप्त नहीं होता है।

प्रश्न 8:— ''क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो'' पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :— यहाँ कवि दिनकर जी यह कहना है कि जिस साँप के पास विष होता है उससे डरना स्वाभाविक है और उसी सर्प को क्षमा शोभा देती है। आशय यह है कि क्षमा करने का अधिकार शक्तिशाली तथा पराक्रमी वीर पुरूष को ही होता है। दुर्बल अथवा कायर मनुष्य को क्षमा करने की बात कहना शोभा नहीं देती है क्योंकि जिस मनुष्य में शक्ति नहीं है वह दण्ड तो दे ही नहीं सकता है क्षमा करेगा तो यह भी उसकी मजबूरी होगी। अतः यह कह सकते है कि क्षमा वीर पुरूष को ही शोभा देती है।

प्रश्न 9:— ''कुरूक्षेत्र के पूर्व नहीं क्या समर लगा था चलने ?'' कहने से पितामह भीष्म का क्या आशय है?

उत्तर :— भीष्म पीतामह का आशय यह है कि कुरूक्षेत्र के युद्ध के आरम्भ होने से पूर्व ही वे कारण बन गए थे कि कौरवों और पाण्डवों को युद्ध करना आवश्यक हो गया था। अर्थात् युद्ध से पूर्व ही दोनों के मन में प्रतिहिंसा की भावना पनप चुकी थी। दुर्योधन का दुर्व्यवहार पाण्डवों को तथा राज्य का लालच स्वयं दुर्योधन को युद्ध की ओर धकेल रहे थे।

शेखावाटी मिशन—100

प्रश्न 10:— कवि दिनकर के व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :— हिन्दी के ख्याति प्राप्त कवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितम्बर 1908 ई में सिमरिया, मुंगेर (बिहार) में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआा। इनके पिता रवि सिंह एवं माता मनरूप देवी थी। दिनकर जब दो वर्ष के ही थे कि इनके पिता का स्वर्गवास हो गया फलतः दिनकर और इनके भाई— बहिनों का पालन—पोषण उनकी माता द्वारा किया गया।

दिनकर के कवि जीवन का वास्तविक प्रारम्भ सन 1935 ई में हुआ जब रेणुका प्रकाशित हुई दिनकर जी की पद्य रचनाओं में रेणुका, हुंकार, रसवन्तीं, नीलकुसुम, कुरूक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी द्वन्द्वगीत, इतिहास के आँसू, सीपी और शंख नीम के पत्ते, नये सुभाषित, आत्मकथा की आँखे, बापू, दिल्ली और परशुराम की प्रतीक्षा आदि प्रसिद्ध रही है।

पाठ—11

सुमित्रान्दन पंत — भारत माता, धरती कितना देती है।

प्रश्नः—1 सुमित्रानन्दन पंत का मूल नाम क्या था ?

उत्तरः— गुसाई दत्त

प्रश्नः—2 सुमित्रानन्दन पंत को 'प्रकृति को चितेरा' कवि क्यों कहा गया है ?

उत्तरः— क्योंकि पंत ने अपने काव्य में प्रकृति के कोमल, सुन्दर एवं सजीव चित्र अंकित किये है। कवि ने अपनी कविताओं में प्राकृतिक दृश्यों को मानवीय क्रिया —कलापो के रूप में प्रस्तुत किया है।

प्रश्नः—3 सुमित्रानंदन पंत के काव्य पर किसका प्रभाव है ?

उत्तरः— पंत के काव्य पर अरविन्द, महात्मागांधी एवं कार्ल मार्क्स का प्रभाव है।

प्रश्नः—4 भारत माता को किसकी प्रकाशिनी बताया गया है?

उत्तरः— भारत माता को गीता की प्रकाशिनी बताया गया है।

प्रश्नः—5 ''धरती कितना देती है कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है ?

उत्तरः— इस कविता में कवि ने यह संदेश दिया है कि हम जैसे बीज बोयेगे वैसे ही फल हमें मिलेगें।

प्रश्नः—6 ''रत्न प्रसविनी है वसुधा अब समझ सका हूँ''। कहने का क्या आश्य है ,

उत्तरः— सेम के बीजों को उगा हुआ और उनपर लदी फलियों को देखकर कवि ने माना कि धरती बहुमूल्य फसलें पैदा करती है।

प्रश्नः—7 कवि धरती पर किसकी फसल उगाना चाहता है ?

उत्तरः— कवि धरती पर मानवता, सक्षमता व ममता की फसल उगाना चाहता है।

प्रश्नः—8 ''मैं अबोध था मैने गलत बीच बोये थे'', कवि ने बचपन में क्या गलती की थी ?

उत्तरः— कवि बचपन में अबोध था । कवि ने बचपन में जमीन में पैसे बोए थे । उसने सोचा था कि पैसों के पेड़ उगेंगे। फिर रूपयों की फलदार मधुर फसलें खनकेगी जिससे मैं एक धनवान व्यक्ति बन जाऊगा । कवि का ऐसा सोचना ही उसकी भूल थी। कवि ने भूमि को भी बचपन में बंजर समझा था।

प्रश्नः—9 ''मैं अवाक् रह गया वंश कैसे बढ़ता है'' — कवि अवाक् क्यों रह गया ?

उत्तरः— कवि ने देखा कि सेम के पौधे तेजी से बढ़ने लगे। उन पर मखमली चंदोवे लग गए । बेलें बल खाकर आँगन में लहरा उठी वे तेजी से उपर की ओर बढ़ने लगी । किसी के वंश अथवा परिवार की वृद्धि इसी प्रकार होती है। सेम के परिवार को तेजी से बढ़ता देखकर कवि इतना अवाक् हुआ कि वह कुछ बोल न सका।

प्रश्नः—10 भारतमाता

ग्रामवासिनी

खेतों में फैला है श्यामल,

धूल भरा मैला सा आंचल

गंगा यमुना में आँसू जल

मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी

प्रस्तुत पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

शेखावाटी मिशन—100

(1) संदर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में संकलित 'भारत–माता' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचियता छायावादी कवि 'सुमित्रानन्दन पंत' है। कवि ने भारत माता को ग्राम में बसने वाली तथा पराधीनता की स्थिति में उदासीन बताया है।

(2) व्याख्या – कवि भारत के गाँवों की स्वतंत्रता से पूर्व की दशा का वर्णन कर रहा है । वह कहता है कि भारत माता गाँवों में बसने वाली है। हरे–भरे खेत भारत माता का आँचल है जो धूल से सना हुआ है और मैला है। गंगाा और यमुना नदियाँ उसके नेत्रों से बहने वाले आँसू है। आज भारत माता पराधीनता की स्थिति में मिट्टी की मूर्त अथवा बेजान एवं उदास व शान्त है।

(3) विशेष : (1) भाषा साहित्यिक खड़ी बोली एवं मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास अलंकार का प्रयोग।

(2) कवि ने भारत के गाँवों की दुर्दशा का वर्णन किया है।

गद्य खण्ड सरयू

अंक 16

पाठ – 13 गुल्ली डंडा – प्रेमचन्द

प्रश्नः–1 प्रेमचन्द का जन्म कब हुआ था ?

उत्तरः– 31 जुलाई 1880 ई. में

प्रश्नः–2 प्रेमचन्द को किसने ''उपन्यास सम्राट'' की उपाधि से नवाजा था ?

उत्तरः– बंगाली के प्रसिद्ध साहित्यकार शरतचन्द्र ने

प्रश्नः–3 प्रेमचन्द के अन्तिम उपन्यास का क्या नाम है ? इसको किसने पूरा किया ?

उत्तरः– प्रेमचन्द के अन्तिम उपन्यास का नाम 'मंगलसूत्र' है जिसे उनके पुत्र अमृतराय ने पूरा किया था ।

प्रश्नः–4 प्रेमचन्द द्वारा कहानियों के विकास क्रम को कितने काल खण्डों में बांट सकते है ? तथा इनके द्वारा रचित कुल कितनी कहानियाँ है ?

उत्तरः– तीन काल खण्डों में विभाजित किया जा सकता है तथा कुल 301 कहानियाँ प्रेमचन्द द्वारा रचित है।

प्रश्नः–5 ''मै। समझता था, न्याय मेरी ओर है'' – कथानायक ऐसा क्यों समझता था ?

उत्तरः– कथानायक ने एक दिन पहले गया को अमरूद खिलाया था। कथानायक समझता था कि अमरूद खाकर गया को दाव माँगने का हक नहीं था।

प्रश्नः–6 कथानायक को 'गुल्लीडंडा' खेलों का राजा क्यों लगता है ?

उत्तरः– गुल्ली डंडा नामक खेल के सामान महँगे नहीं है । किसी पेड़ से टहनी काटकर गुल्ली तथा डंडा बनाये जा सकते है। इस खेल के लिए लॉन, कोर्ट, नेट, थापी आदि की जरूरत नहीं पड़ती । मजे से किसी पेड़ से एक टहनी काट ली, गुल्ली बना ली और दो आदमी भी आ गए तो खेल शुरू हो जायेगा । इतनी खुबियों के कारण लेखक को गुल्ली डंडा खेलों का राजा लगता है।

प्रश्नः–7 कथानायक और गया के बीच स्मृतियाँ सजीव होने में कौन – सी बाधा बनती है ? और क्यों ?

उत्तरः– कथानायक और गया के बीच स्मृतियाँ सजीव होने में अफसरी अथवा पद और प्रतिष्ठा आड़े आ रही थी क्यों कि कथानायक तो इंजीनियर था लेकिन गया एक मामूली साईस (नौकर) था।

प्रश्नः–8 ''वह बड़ा हो गया है, मै छोटा हो गया हूँ'' – कथानायक को ऐसा अनुभव कब तथा क्यों हुआ ?

उत्तरः– कथानायक ने देखा कि उसके साथ खेलते समय गया अनमना था। वह खेल में न तो अपनी दक्षता दिखा रहा था और न ही मेरी अनियमितताओं का विरोध कर पा रहा था। वह खेल नहीं रहा था, मुझे खिला रहा था, मेरा मन रख रहा था। कथानायक के विचार में यह अफसरी उसके व गया के बीच में दीवार बन गई है। मैं अब उसका लिहाज पा सकता हूँ, अदब पा सकता हूँ। लेकिन साहचर्य (साथ) नहीं पा सकता । बचपन में सब समकक्ष थे उनमें कोई भेद न था। यह पद पाकर अब मैं केवल उसकी दया के योग्य हूँ। वह मुझे अपना जोड़ नहीं समझता । वह बड़ा हो गया हैं, मैं छोटा हो गया हूँ।

प्रश्नः–9 गया के व्यक्तित्व की तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तरः– 1. गया गरीब परिवार का दुबला–पतला, लम्बा तथा काला सा लड़का है।

2. गया गुल्ली क्लब का चैम्पियन है जिसकी तरफ वह आ जाए, उसकी जीत निश्चित थी।

3. गया समझदार है । वह कथानायक का अफसर होने के नाते अदब करता है उनका मन रखने के लिए धांधली का विरोध नहीं करता है।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्नः– 10. कथानायक के व्यक्तित्व की तीन विशेषताएं बताइए।

1. कथानायक थानेदार का पुत्र है । उसके पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी व समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त है।

2. कथानायक पढ़ाई में प्रवीण है। वह बड़ा होकर इंजीनियर बनता है।

3. कथानायक गुल्ली डंडा का शौकीन है तथा नई जगह देखने को उत्सुक था।

पाठ – 14 मिठाई वाला – भगवती प्रसाद वाजपेयी

प्रश्नः–1 मिठाईवाला कहानी में किन – किन रूपों में आया था ?

उत्तरः–1 (अ) खिलौने वाला (ब) मुरलीवाला (ग) मिठाईवाला के रूप में

प्रश्नः–2 मिठाई वाले की आँखे आँसुओ से तर क्यों थी ?

उत्तरः– रोहिणी को अपनी कहानी बताकर उसकी दुःखद स्मृतियाँ सजीव हो गई थी । इस कारण उसकी आँखों में आँसू आ गए थे।

प्रश्नः–3 कहानी विधा की दृष्टि से मिठाईवाला' कहानी किस प्रकार की है ?

उत्तरः– कहानी विधा की दृष्टि से मिठाईवाला कहानी बाल – मनोविज्ञान पर आधारित मनोविश्लेषणात्मक कहानी है।

प्रश्नः–4 ''पेट जो न कराये सो थोड़ा है'' इस कथन से मिठाईवाले का कौनसा मनोभाव प्रकट होता है ?

उत्तरः– रोहिणी अपने मकान से मुरलीवाले की बातें सुनकर सोच रही थी कि वह भला आदमी जान पड़ता है। बच्चों से प्यार से बात करता है तथा सस्ती चीजें उनको देता है । समय की बात है कि वह मारा–मारा फिरता है । पेट भरने के लिए आदमी को न जाने क्या–क्या करना पड़ता है । इस कथन में रोहिणी का मिठाईवाले के प्रति दया और सहानुभूति का मनोभाव प्रकट होता है।

प्रश्नः–5 ''मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा'' इसका क्या कारण था ?

उत्तरः– जब विजय बाबू ने मुरलीवाले पर आक्षेप करते हुए कहा था कि तुम लोग झुठ बोलकर अपना अहसान लादते हो। इस बात पर मुरलीवाला एकदम निराश एवं अप्रतिभ हो उठा क्योंकि वह बच्चों की खुशी पाने के लिए सस्ती चीजें बेचता है कमाना उसका उद्देश्य नहीं था।

प्रश्नः–6 मिठाई वाले द्वारा बताई गई मिठाइयों की तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तरः– 1. उसकी मिठाइयाँ रंग–बिरगी, खटटी, मिठ्ठी तथा जायकेदार थी।

2. वे मिठाइयां बड़ी देर तक मुँह में टिकती है।

3. वे खांसी भी दूर कर सकती है।

प्रश्नः–7 मुरलीवाले ने बच्चों को अपनी माँ से पैसे माँगने का क्या तरीका बताया ?

उत्तरः– मुरलीवाले ने बच्चों को बताया कि वह माँ की धोती पकड़कर उसके पैरों में लिपटकर उससे पैसे मांगे । इस प्रकार आग्रहपूर्वक माँगने पर माँ पैसे देने से कभी मना नहीं करेगी और उसको पैसे मिल जाएंगें।

प्रश्नः–8 कहानीकार ने कहानी का शीर्षक मिठाईवाला ही क्यों रखा है? खिलौनेवाला या मुरलीवाला क्यों नहीं ?

उत्तरः– फेरीवाला तीन रूपों खिलौनेवाला, मुरलीवाला तथा मिठाईवाला में आता है। वह ऐसा क्यों करता है? यह तब प्रकट होता है जब मिठाईवाला रोहिणी को अपने जीवन की कथा सुनाता है । कहानीकार जो संदेश देना चाहता हैं वह मिठाईवाला द्वारा सुनाई बातों में ही निहित है अतः इसका शीर्षक मिठाईवाला बिल्कुल उपर्युक्त है।

प्रश्नः–9 ''मिठाईवाला'' कहानी के प्रमुख पात्र की चरित्रगत विशेषताएं लिखिए।

उत्तरः– 1. मिठाईवालें का मन बच्चों के लिए वात्सल्यभाव से भरा हुआ है। वह उनको अत्यन्त अधिक स्नेह करता है।

2. मिठाईवाला लोभ–लालच से रहित व ईमानदार था। उसका उद्देश्य व्यापार करना न होकर उन बच्चों में अपने बच्चों को अनुभव करना

3. मिठाईवाले का स्वर अत्यन्त मधुर था जो कि छोटे–बड़े सभी को आकर्षित करता था।

प्रश्नः–10 मिठाईवाला कहानी की मूल संवेदना क्या है ?

उत्तरः– मिठाईवाला कहानी में खिलौना, मुरली तथा मिठाई बेचने वाला एक ही आदमी है। जो किसी समय अपने नगर का प्रतिष्ठित आदमी था । उसकी पत्नी और दो छोटे बच्चे थे। परन्तु विधाता ने एक दिन उससे पत्नी और दो छोटे बच्चों को छीन लिया । तब से वह अपने हृदय में छिपे वात्सल्य की पूर्ति के लिए और बच्चों के अभाव की वेदना से स्वयं को मुक्त करने के लिए दूसरों के बच्चों के बीच संबंध जोड़ता था। इससे वह उन सभी बच्चों में अपने बच्चों की झलक पाकर संतुष्टि प्राप्त कर लिया करता था। प्रस्तुत कहानी में मानव हृदय की वात्सल्य भावना की संतुष्टि दर्शाना ही मूल संवेदना है।

शेखावाटी मिशन–100

पाठ 16 शिरीष के फूल – हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रश्नः–1 शिरीष के फूल किस प्रकार का निबंध है,

उत्तरः– ललित निबंध

प्रश्नः–2 शिरीष के फूल में किन कवियों की अनासक्ति की बात की है।

उत्तरः– कालिदास, सुमित्रानंदन पंत और रविन्द्रनाथ

प्रश्नः–3 'देश में एक बुढ़ा था' – यह बूढ़ा शब्द किसके लिए प्रयुक्त किया गया है ?

उत्तरः– महात्मा गांधी के लिए

प्रश्नः–4 शिरीष के फूल शीर्षक निबंध किस निबंध संग्रह से संकलित है ?,

उत्तरः– 'कल्पलता' निबंध संग्रह से

प्रश्नः–5 लेखक ने शिरीष को अद्भुत अवधूत क्यों कहा ?

उत्तरः– शिरीष एक अवधूत की भांति सुख अथवा दुःख से अप्रभावित तथा विरक्त रहता है, हार नहीं मानता है।

प्रश्नः–6 लेखक के अनुसार कबीर और कालिदास सरस रचनाएँ कैसे कर सके ?

उत्तरः– कबीर फक्कड़ एवं मस्तमौला थे । वह निरन्तर कर्मरत थे । संकटों से जूझते हुए भी वे अविचलित रहते थे। कालिदास भी विरक्त तथा अनासक्त थे । उनको समदर्शी, निर्विकार योगी तथा विदग्ध प्रेमी का हृदय प्राप्त हुआ था । इस प्रकार से ये दोनों कवि शिरीष के समान ही मस्त और बेपरवाह होने के कारण सरस रचनाएँ कर सके थे ।

प्रश्नः–7 'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो–झरा जो बरा सो बुताना' इस पंक्ति में तुलसीदास जी ने क्या संदेश दिया है ?

उत्तरः– उपर्युक्त पंक्ति में तुलसीदास ने संसार के श्शाश्वत एवं अतिप्रामाणिक सत्य जरा और मृत्यु के बारे में बताया है । जो फलता है, वह झड़ जाता है तथा जो बूढ़ा हो जाता है वह मर जाता है यह प्रकृति का नियम है। तुलसी ने संदेश दिया है कि इसको स्वीकार करके निर्लिप्त जीवन बिताना चाहिए।

प्रश्नः–8 "मैं जब–जब शिरीष की ओर देखता हूँ। तब–तब हूक उठती है हाय! वह अवधूत अब कहाँ है?
लेखक के मन में टीस क्यों होती है ?

उत्तरः– लेखक के मन में टीस होती है कि शिरीष के समान ही अनासक्त महात्मा गाँधी आज नहीं है। आज हमारे भारत देश में भ्रष्टाचार और स्वार्थपरता का बोलबाला है । गरीब जनता अत्याचार और शोषण से कराह रही है। लेकिन आज ऐसा कोई भी कर्मयोगी देशभक्त नहीं जो इन सब बुराइयों से देश का उद्धार कर सके। लेखक को ऐसा कोई व्यक्ति नहीं दिखाई देने से हूक उठती है।

प्रश्नः–9 कर्णाट राज की प्रिया विज्जिकादेवी का कवियों के संबध में क्या विचार है ?

उत्तरः– कर्णाट राज की प्रिया विज्जिकादेवी ने गर्वपूर्वक कहा था कि एक कवि ब्रह्मा थे, दूसरे वाल्मीकि और तीसरे व्यास । एक ने वेदों को दिया, दूसरे ने रामायण और तीसरे ने महाभारत को । इनके अतिरिक्त और कोई यदि कवि होने का दावा करे तो मैं कर्णाट राज की प्यारी रानी उनके सिर पर अपना बायाँ चरण रखती हूँ।

प्रश्नः–10 'शिरीष' के फूल' ललित निबंध के माध्यम से द्विवेजी ने क्या संदेश दिया है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः– 'शिरीष के फूल' ललित निबन्ध संदेश प्रधान निबन्ध है जिसमें द्विवेदी जी ने आँधी लू और गरमी की प्रचण्डता मे अविचलित होकर कोमल पुष्पों का सौन्दर्य बिखेरने वाले शिरीष की तुलना अवधूत से करते हुए मनुष्य की अजेय जिजीविषा और तुमुल कोलाहल संघर्ष के बीच धैर्यपूर्वक लोक–चिन्तन हित रह कर्त्तव्यशील रहने को महान मानवीय मूल्य के रूप में स्थापित किया है। लेखक ने शिरीष के माध्यम से इस दार्शनिक सत्य को भी अभिव्यक्त किया है कि मनुष्य को यह समझ लेना चाहिए कि संसार परिवर्तनशील है और परिवर्तन की गति के अनुरूप अपने को ढ़ाल लेना ही अच्छा है । संसार का सत्य यही है कि जो वस्तु एक दिन पल्लवित और पुष्पित हुई है उसका झड़ना निश्चित है मनुष्य को अनासक्त भाव से जीवन –यापन करना चाहिए । जो जितना अनासक्त हो सकता है, वह उतना ही अधिक समाज के लिए योगदान दे सकता है । अनासक्ति के साथ–साथ फक्कड़ाना मस्ती भी जरूरी है।

पाठ – 17 पाजेब – जैनेन्द्र

प्रश्नः–1 जैनेन्द्र किस प्रकार के कथाकार के रूप में प्रसिद्ध है –

उत्तरः– मनोवैज्ञानिक कथाकार

प्रश्नः–2 बालकों की बुद्धि कैसी होती है ?

उत्तरः– बालकों की बुद्धि कोमल तथा तर्कहीन होती है ?

प्रश्नः–3 पाजेब मुन्नी के लिए कौन लाता है। ?

उत्तरः– पाजेब मुन्नी के लिए उसकी बुआ इतवार को लेकर आती है।

प्रश्नः–4 आशुतोष को बुआ ने जन्मदिन पर क्या देने का वादा किया ?

उत्तरः– बाईसिकिल (साईकिल)

प्रश्नः–5 बातों–बातों में लेखक को क्या पता लगा जिससे वह आशुतोष पर पायल चुराने का संदेह करने लगता है ?

उत्तरः– बातों–बातों में लेखक को पता लगा कि इस शाम आशुतोष नई पतंग और डोर का पिन्ना लेकर आया था । यह जानकर लेखक को संदेह हुआ कि आशुतोष ने ही पाजेब चुराकर पतंग वाले को दी है।

प्रश्नः–6 पाजेब कैसे मिलती है ? पाजेब पर लेखक की प्रतिक्रिया को व्यक्त कीजिए।

उत्तरः– बुआ आई तो बास्केट की जेब में हाथ डालकर पाजेब निकालकर सामने की और बताााया कि पिछले रोज भूल से वह उसके साथ चली गई थी। पाजेब को देखकर लेखक भयभीत भाव से कह उठा कि यह क्या ? जैसे कि वह पाजेब न होकर कोई बिच्छू हो।

प्रश्नः–7 'पाजेब' कहानी में चलन में आई नई पाजेब की क्या विशेषताएँ बताई गई है ?

उत्तरः– बाजार में एक नई तरह की पाजेब चली है। पैरों में पड़कर वे बड़ी अच्छी मालूम होती है । उनकी कड़िया आपस में लचक के साथ जुड़ी रहती है कि पाजेब का मानों निज का आकार कुछ नहीं है जिस पाँव में पड़े उसी से अनुकूल हो जाती है।

प्रश्नः–8 लेखक के अनुसार अपराध प्रवृत्ति को किस प्रकार जीता जा सकता है ?

उत्तरः– लेखक का मानना कि अपराध की प्रवृत्ति को दण्ड से नहीं बदला जा सकता । अपराध के प्रति करूणा होनी चाहिए रोष नहीं होना चाहिए । अपराध की प्रवृत्ति अपराधी के साथ प्रेम का व्यवहार करने से ही दूर हो सकती है। उसको आतंक से दबाना ठीक बात नहीं है। बालक का स्वभाव कोमल होता है, उसके साथ स्नेह का व्यवहार करना चाहिए ।

प्रश्नः–9 'पाजेब' कहानी के मुख्य पात्र आशुतोष का चरित्र–चित्रण कीजिए।

उत्तरः– (1) आशुतोष आठ वर्ष का बालक है उसकी बुद्धि कोमल तथा अपरिपक्व है। वह दूसरों की बातो तथा भावनाओं से शीघ्र प्रभावित हो जाता है। वह अपने पिता के स्नेह, प्रलोभन, व्यंग्य आदि भावों से प्रभावित होकर वह काम करना स्वीकार कर लेता है, जो उसने किया ही नहीं ।

(2) आशुतोष तर्कपूर्ण प्रश्नों को समझता भी नहीं है। अपने पिता के तर्कपूर्ण प्रश्नों का सामना वह नहीं कर पाता तभी तो निरपराध होते हुए भी पाजेब की चोरी करना स्वीकार कर लेता है।

(3) प्रत्येक बच्चे की तरह आशुतोष भी हठ करता है । अपनी छोटी बहिन को पाजेब मिलने के बाद वह भी अपनी बुआ से बाईसिकिल लाने के लिए कहता है।

प्रश्नः–10 'पाजेब' कहानी का शीर्षक कैसा है ? उसकी विशेषताएँ लिखिए।

उत्तरः– 'पाजेब' कहानी का शीर्षक सर्वथा' उपयुक्त है इस पूरी कहानी में पाजेब का वर्णन शुरू से अंत तक मिलता है । कथावस्तु का ताना–पाना पाजेब के चारों और ही बुना गया है। मुन्नी की पाजेब की लालसा से कहानी शुरू हुई है। पाजेब चोरी का आरोप आशुतोष पर लगा है। अंत में बुआ के पास पाजेब मिलने पर ही वह उस आरोप से मुक्त हो पाता है । कहानी का शीर्षक पाजेब आकर्षक, जिज्ञासापूर्ण कथावस्तु तथा पात्रों के चरित्र का आधार तथा मूल भाव का सूचक है।

प्रश्नः–11 पाजेब कहानी का मूल उदेश्य क्या है ?

उत्तरः– पाजेब कहानी का मूल उदेश्य बाल–मनोविज्ञान का चित्रण करना है। बालक अबोध होते है । उनकी कोमल बुद्धि तर्कहीन होती है । वे अपनी बात स्पष्ट नहीं कर पाते । स्नेह, भय और प्रलोभन के कारण अपराधी न होने पर भी वे अपराध स्वीकार कर लेते है । इस कहानी में आशुतोष की यह स्थिति है । उसने न पाजेब चुराई न छुन्नू को दी और न पतंगवाले को बेची । फिर भी वह पिता के सामने स्थिति स्पष्ट नहीं कर पाने के कारण अपराधी बन जाता है। एक – एक कर सारे अपराध स्वीकार कर लेता है परन्तु अन्त में निरपराधी सिद्ध होता है।

प्रश्नः—12 लेखक जैनेन्द्र कुमार का जीवन परिचय एवं साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तरः— प्रेमचन्दोत्तर युग के प्रसिद्ध विचारक, उपन्यासकार कथाकार और निबन्धकार जैनेन्द्र कुमार का जन्म सन् 1905 ई. में अलीगढ़ के कौड़ियागंज नामक कस्बे में हुआ था। पिता का नाम प्यारेलाल एवं माता का नाम श्रीमती रामदेवी था।

जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों के द्वारा हिन्दी में एक सशक्त मनोवैज्ञानिक कथा धारा का प्रर्वतन किया। इनकी लगभग दो सौ कहानियाँ है। जैनन्द्र की प्रमुख रचनाओं में परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, विवर्त , सुखदा, अनाम स्वामी, जयवर्धन, मुक्तिबोध (उपन्यास) फांसी, जयसन्धि, वातायन, नीलम देश की राजकन्या, एक रात, दो चिड़ियाँ, पाजेब आदि कहानी संग्रह है। जैनन्द्र को साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत—भारती सम्मान, पद्मभूषण से सम्मानित किया गया है।

अलोपी — महादेवी वर्मा (संस्मरण)

प्रश्नः—1 'अलोपी' पाठ किस गद्य विधा की रचना है ?

उत्तरः— 'अलोपी' पाठ संस्मरण गद्य—विधा रचना है।

प्रश्नः—2 अलोपी के चक्षु के अभाव की पूर्ति किसने की ?

उत्तरः— अलोपी के चक्षु के अभाव की पूर्ति उसकी रसना (जीभ) ने की ।

प्रश्नः—3 ''अलोपी देवी कदाचित् उस सूम के समान थी जो अपने दानी होने की ख्याति के लिए दान करता है।'' इस पंक्ति द्वारा दानदाता की किस मनोभावना पर व्यंग्य किया गया है ?

उत्तरः— प्रस्तुत पंक्तियों द्वारा दानदाता की यश पाने की लिप्सा पर व्यंग्य किया गया है ।

प्रश्नः—4 अलोपी को अलोपी नाम से क्यों पुकारा जाता था ?

उत्तरः— अलोपी का जन्म अलोपी देवी के वरदान के कारण हुआ था । अतः उसका नाम अलोपी रखा गया था।

प्रश्नः—5 महादेव वर्मा के कविता संग्रहो के नाम लिखिए।

उत्तरः— 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा' तथा सांध्यगीत आदि

प्रश्नः—6 अलोपी के जीवन तथा मृत्यु के बारे में महादेवी का क्या कहना है ?

उत्तरः— महादेवी अलोपी के जीवन को नियति का व्यंग्य तथा मृत्यु को संसार के छल का परिणाम मानती है।

प्रश्नः—7 ''आज के पुरूष का पुरूषार्थ विलाप है''। लेखिका ने किस आशय से ऐसा कहा है ?

उत्तरः— लेखिका ने अनुभव किया है कि आज पुरूष कर्त्तव्यनिष्ठ तथा परिश्रमी नहीं है। वे श्रमपूर्ण कठोर जीवन न बिताकर अपनी निराशा और अभावों की शिकायतें करते रहते है। वे हर समय अपने दुर्भाग्य का रोना रोते रहते है। आधुनिक पुरूष की ऐसी अवस्था देखकर महादेवी ने रोने पीटने को उनका पुरूषार्थ बताया है।

प्रश्नः—8 'गिरा अनयन नयन बिनु बानी' लेखिका इन शब्दों को किस संदर्भ में ठीक मानती है ?

उत्तरः— जब लेखिका ने अलोपी से कहा कि तरकारियों का प्रतिदिन हिसाब कौन रखेगा, तब उसने कहा कि इसका हिसाब तो मेरा ताउ रख लेगा और छात्रावास का हिसाब मेट्रन रख लेगी । रग्घु पढ़ा — लिखा न था तो दूसरी ओर अलोपी अंधा था। अलोपी के पास वाणी थी पर नेत्र नहीं थे जब कि रग्घु के पास नेत्र थे पर समझदारी नहीं थी । इसी संदर्भ में लेखिका ने इस कथन को ठीक माना है।

प्रश्नः—9 ''अंधे का दुख गूँगा होकर आया था । अतः सांत्वना देनेवाले उसके ह्रदय पहुँचने का मार्ग ही न पा सकते थे''। पंक्तियों का क्या आशय है ?

उत्तरः— यहाँ लेखिका का यह आशय है कि अलोपी अंधा था लेकिन मूक नहीं था । वह खूब बातें करता था उसके शरीर में आँखों की कमी को वाणी ने पूरी कर दी थी। लेकिन जब अलोपी ने शादी कर ली और छः महीने के बाद पत्नी के विश्वासघात के कारण आलोपी दुःखी हो गया था। अब वह पहले की तरह था। इसलिए लेखिका ने अलोपी के बारे में इन पंक्तियों में कहा है कि अंधा तो वह था ही अब गूंगा भी हो गया था उसका दुःख गूंगेपन के रूप में प्रकट हुआ था।

शेखावाटी मिशन—100

प्रश्नः—10 ''एक बार की घटना अपनी क्षुद्रता में मेरे लिए बहुत गुरू है'' । महादेवी किस छोटी घटना को अपने लिए महत्वपूर्ण बता रही है? तथा इसका कारण क्या है ?

उत्तरः— महादेवी बुखार से पीड़ित थी। यह पता चलने पर अलोपी स्वयं जाकर अलोपी देवी की विभूति लाया । उसने महादेवी से कहा कि उसको जीभ पर रखने तथा माथे पर लगाने से सभी रोग दूर हो जाते है । यह घटना बहुत मामूली थी किन्तु इसमें महादेवी के प्रति अलोपी का आदर प्रेम तथा सहानुभूति के भाव भरे हुए थे। इससे उसके हृदय की उच्च भावुकता प्रकट हो रही थी। छोटी होने पर भी यह घटना महादेवी के लिए महत्वपूर्ण तथा स्मरणीय है।

प्रश्नः—11 'अलोपी' संस्मरण के नायक अलोपी की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तरः— 1. नेत्रहीन किन्तु पराक्रमी – अलोपी अंधा था लेकिन चुनौती को स्वीकार करते हुए कर्म क्षेत्र में कूदना चाहता था एवं मेहनत कर अपना जीवन–यापन करना चाहता था ।

2. आत्मविश्वासी – अलोपी में गजब का आत्मविश्वास है । उसको लगता ही नहीं कि वह नेत्रहीन है तथा इस कारण काम नहीं कर सकता है ।

3. सभी के प्रति आदर तथा सद्‌भाव – अलोपी बड़ो का आदर करता है। वह महादेवी का अत्यधिक सम्मान करता है। वह अपनी वृद्धा माँ के प्रति चिन्तित है । अपनी धोखेबाज पत्नी की शिकायत भी पुलिस में नहीं करता है।

4. विश्वासघात से आहत – पत्नी का विश्वासघात अलोपी को तोड़ देता है । इससे उसका शरीर तथा मन प्रभावित होता है। वह स्वयं को क्षमा नहीं कर पाता और एक दिन यह संसार छोड़ देता है।

प्रश्नः—12 अलोपी किस कारण छात्रावास की बालिकाओं को फल देता था ?

उत्तरः— अलोपी की आठ–नौ वर्ष की एक चचेरी बहन मर चुकी थी । उन छात्रावास की बालिकाओं के स्वर में अपनी बहन की प्रतिच्छाया देखता था। इसी कारण वह उन्हें स्नेह से फल देता था।

संस्कारों और शास्त्रों की लड़ाई (व्यंग्य निबंध) लेखक – हरिशंकर परसाई

प्रश्नः—1 निबंध में लेखक नारी मुक्ति का कारण किसकों मानता है ?

उत्तरः— महँगाई को।

प्रश्नः—2 लेखक के मित्र जो कि उन्हे घर ले जाते है उनके यहाँ बिना पर्दे के एक मात्र मादा कौन थी ?

उत्तरः— लेखक के मित्र के घर बिना पर्दे की एकमात्र मादा बिल्ली थी ।

प्रश्नः—3 संस्कारों के सीने पर चढ़कर गला कौन दबा रहा है ?

उत्तरः— अर्थशास्त्र संस्कारों के सीने पर चढ़कर गला दबा रहा है ।

प्रश्नः—4 संस्कारों और शास्त्रो की लड़ाई' नामक निबंध परसाई जी के किस निबंध संग्रह से लिया गया है ?

उत्तरः— 'शिकायत मुझे भी है' निबंध संग्रह से

प्रश्नः—5 बीस साल से मित्र ने सच्चा पिता किसे मान रखा था ?

उत्तरः— मार्क्सवाद को ।

प्रश्नः—6 लेखक के अनुसार प्रयाग और इलाहाबाद में क्या अन्तर है ?

उत्तरः— लोग जब चोरी करने जाते है, तब इस शहर को इलाहाबाद कहते हैं और जब पिण्डदान करने जाते है तब प्रयाग कहते है।

प्रश्नः—7 ''जिनकी हैसियत है वे एक से ज्यादा भी बाप रखते है'' ? लेखक का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः— व्यक्ति स्वार्थी है । जिससे स्वार्थ सिद्ध होता है वह उसे महत्त्व दे देता है और बाप बना लेता है।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्नः—8 "मै समझा, इसमें द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है" यहॉ द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद से क्या तात्पर्य है ?

उत्तरः— मार्क्सवादी सिद्धान्त और संस्कारों में संघर्ष हो गया । आचरण और विचार में टकराव हो गया । व्यवहार में दोगलापन हो गया।

प्रश्नः—9 'संस्कारों और शास्त्रों की लड़ाई' पाठ के मूल उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः— यह एक व्यंग्य प्रधान निबंध है, इस निबंध में निबंधकार ने विचार और आचरण में विरोध तथा व्यवहार में दोगलेपन का वर्णन सशक्त तरीके से किया है । साथ ही निबंध में घटनाओं के कई ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए है जिनमें थोड़ी सी विपरीत परिस्थितियों के दबाब में सिद्धान्तवादियों के सिद्धान्त टूट जाते है। आचरण और विचार के विरोध, व्यवहार में दोगलेपन को प्रस्तुत करना ही यहाँ व्यंग्यकार परसाई जी का प्रमुख उद्देश्य है।

प्रश्नः—10 अर्थशास्त्र संस्कारों के सीने पर चढ़कर गला दबा रहा है । इधर एक लड़के ने लड़की को उसी की इच्छा से भगाकर सरकारी शादी कर ली । लड़का योग्य सुन्दर और अच्छी नौकरी वाला था। पहले लड़की की माँ के संस्कारों ने जोर मारा और उसने हाय—तोबा मचाया। अर्थशास्त्र से यह बरदाश्त नहीं हुआ उसने संस्कारों को एक पटकनी दी । माँ ने सोचा यह जो 15 हजार दहेज के लिए रखे थे, साफ बचे । फिर 15 हजार में इतना अच्छा लड़का नहीं मिलता । उन्होंने कार्ड बॉट कर दावत दे दी।

उपर्युक्त गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर :— **(1) संदर्भ एवं प्रसंग** — प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठय पुस्तक सरयू में व्यंग्यात्मक निबंध 'संस्कारों और शास्त्रों की लड़ाई' से लिया गया है। इस निबंध के लेखक 'हरिशंकर परसाई' है।

इस गद्यांश में लेखक ने संस्कारों पर अर्थशास्त्र की विजय को दर्शाया है।

(2) व्याख्या — लेखक ने कहा है कि अर्थप्रधान युग में अर्थ की प्रधानता है। अर्थ कमाने के लिए व्यक्ति अपने सिद्धान्तों को भूल जाता है। संस्कार धरे रह जाते है। एक लड़के ने लड़की की इच्छा से उसे भगाकर कोर्ट मैरिज कर ली । लड़का योग्य, सुन्दर और अच्छी नौकरी वाला था। माँ पुराने विचारों की थी उसके संस्कार इस प्रकार की शादी के विरूद्ध थे इसलिए लड़की की माँ ने पहले तो शादी का विरोध किया लेकिन अर्थशास्त्र का नियम समझकर बाद में उसे अनुभव हुआ कि इस शादी के कारण दहेज के पन्द्रह हजार रूपए बच गए। दहेज देने पर भी इतना अच्छा लड़का नहीं मिलता। अर्थ के लोभ ने संस्कारों को दबा दिया। माँ ने शादी को स्वीकार कर लिया। उन्होंने केवल दावत दे दी। माँ के सिद्धान्त एवं संस्कार अर्थ के आगे पछाड़ खा गए।

(3) विशेष :

1. लेखक की भाषा व्यंग्यात्मक एवं खड़ी बोली है।
2. अर्थ के आगे सिद्धान्तों का कोई महत्व नहीं रहता है।

शेखावाटी मिशन—100

शेखावाटी मिशन –100 परीक्षा (2020–21)

उच्च माध्यमिक परीक्षा मॉडल प्रश्न–पत्र 2021

विषय –हिन्दी साहित्य

कक्षा – 12

समयः 3¼ घण्टे पूर्णांक : 80

खण्ड–अ

दिए गए प्रश्नों के उत्तर का सही विकल्प चयन कर उत्तर पुस्तिका में लिखिए :–

बहुवैकल्पिक प्रश्न 1×10=10

(1) निम्न में से कौनसी नाट्य रचना भारतेन्दु हरिशचंद्र की नहीं है ?

(अ) अंधेर नगरी (ब) विषस्य विषमौषधम् (स) भारत दुर्दशा (द) अंधा युग

(2) मैथिलीशरण गुप्त जी की प्रसिद्ध रचना भारत –भारती का प्रकाशन वर्ष है–

(अ) 1900 (ब) 1903 (स) 1912 (द) 1918

(3) प्रथम तारसप्तक (1943) के कवि नहीं है –

(अ) भारत भूषण अग्रवाल (ब) सुमित्रानंदन पंत (स) गिरिजा कुमार माथुर (द) अज्ञेय

(4) अकहानी आंदोलन के प्रवर्तक है –

(अ) महीप सिंह (ब) कमलेश्वर (स) निर्मल वर्मा (द) मार्कण्डेय

(5) ''भू पर हय विकल वितुण्ड गिरे।
लड़ते –लड़ते अरि झुण्ड गिरे।। '' में कौनसा काव्य गुण है –

(अ) ओज (ब) मार्धुय (स) प्रसाद (द) कोई नहीं

(6) जिस रचना का अर्थ सुनते ही सुनने वाले की समझ में आ जाए, वहाँ काव्य गुण होता है –

(अ) मार्धुय (ब) प्रसाद (स) ओज (द) कोई नहीं

(7) 22 से लेकर 26 वर्णों तक के वर्णवृत कहलाते है –

(अ) कवित छंद (ब) सवैया छंद (स) रोला छंद (द) छप्पय छंद

(8) हरिगीतिका छंद है –

(अ) सममात्रिक छंद (ब) विषम मात्रिक छंद (स) अर्द्व सम मात्रिक छंद (द) वर्णिक छंद

(9) ''कुमुदिनि हू प्रफुलित भयी साँझ कलानिधि जोइ'' मे अलंकर प्रयुक्त हुआ है –

(अ) अन्योक्ति (ब) समासोक्ति (स) विभावना (द) प्रतीप

(10) कारण के न होने पर भी कार्य का होना वर्णित होने पर कौनसा अलंकार होता है ?

(अ) प्रतीप (ब) अन्योक्ति (स) विभावना (द) व्यतिरेक

प्रश्न संख्या 2 से 11 तक प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए –

अतिलघुत्तरात्क प्रश्न 1×10=10

प्रश्न 2 मार्धुय गुण की परिभाषा लिखिए।

प्रश्न 3 हरिगीतिका छंद का उदाहरण लिखिए।

प्रश्न 4 अन्योक्ति अलंकार की परिभाषा लिखिए।

प्रश्न 5 'अच्युत चरन–तंरगिनी' में रहीम जी ने 'अच्युत' किसे कहा है?

प्रश्न 6 'शिरीष के फूल' निबंध के लेखक का नाम लिखिए–

प्रश्न 7 'भोर का तारा' एकांकी में वर्णित गुप्त साम्राज्य का शासक कौन था ?

प्रश्न 8 'राष्ट्र का स्वरूप' में राष्ट्र के प्रमुख तत्व क्या बताएं है।

प्रश्न 9 काव्य जिसमें दोहा और रोला के मिलने से ....छंद बनता हे।

प्रश्न 10 छप्पय छंद के अन्तिम दो चरणों में प्रत्येक चरण में ....मात्रांए होती है।

प्रश्न 11 जहाँ उपमेय को उपमान की तुलना में किसी गुण विशेष में उत्कृष्ट दिखाया जाए वहाँ ....अलंकार होता है।

खण्ड–ब

प्रश्न संख्या 12 से 18 तक प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों मे दीजिएः

लघूत्तरात्मक प्रश्न 2×8=16

प्रश्न 12 ''यहु ऐसा संसार है जैसा सेंवल फूल '' कबीर ने संसार को सेंवल का फूल क्यों कहा है ?

प्रश्न 13 'धरती कितना देती है' कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है ?

प्रश्न 14 ''आज के पुरूष का पुरूषार्थ विलाप है'' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा है ?

प्रश्न 15 ''हाय वह अवधूत आज कहॉ है'' ? लेखक ने 'अवधूत' किसे और क्यों कहा है ?

प्रश्न 16 रिपोतार्ज किसे कहते है ?

प्रश्न 17 ' 'जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है'' से क्या अभिप्राय है ?

प्रश्न 18 शेखर ने अपने जीवन की कौनसी दो साधनाएं बताई ?

प्रश्न 19 सैनिकों के लिए सुभाष बाबु ने कौनसे तीन आदर्श बताए ?

खण्ड–स

प्रश्न संख्या 20 से 23 तक प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों मे दीजिए –

लघूत्तरात्मक प्रश्न 4×4=16

प्रश्न 20 भारतेन्दु युग को पुनर्जागरण काल क्यों कहा जाता है ?

अथवा

समकालीन हिन्दी गद्य साहित्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

प्रश्न 21 द्विवेदी युग के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए

अथवा

रेखाचित्र और संस्मरण विधा की परिभाषा देते हुए अंतर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 22 प्रगतिवादी काव्यधारा का आशय स्पष्ट करते हुए प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

आधुनिक काल के 'छायावाद युग' की उपन्यास विकास यात्रा पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

प्रश्न 23 अन्योक्ति व समासोक्ति अलंकार में अन्तर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अथवा

प्रतीप अलंकार को उदाहरण सहित समझाइए।

खण्ड–द

प्रश्न संख्या 24 से 25 तक प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों मे दीजिए –

लघूत्तरात्मक प्रश्न 5×2=10

प्रश्न 24 निम्नलिखित गद्यांशो में से किसी एक गद्यांश की सप्रंसग व्याख्या कीजिए–

मैं सोचता हूँ पुराने की यह अधिकार–लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती ? जरा और मृत्यु ये दोनो ही जगत् के अति परिचित और अतिप्रामाणिक सत्य हैं। तुलसीदास ने अफसोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी– 'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा' सो झरा जो बरा, सो बुताना' मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है।

अथवा

दो साल बाद फिर उस शहर में गया। वे फिर मुझे चाय के लिए ले गए। इस बार उन्होने नहीं कहा कि सरिता ने भी आग्रह किया है। उसने नेपथ्य वाला हिस्सा नाटक से काट दिया होगा। मैं बैठक मे पहुँचा। उसने पर्दे की तरफ मुँह करके मेरे आने की घोषणा नहीं की। पर जरा देर बाद ही सरिता जी ट्रे लेकर बाहर आई। एकाध औपचारिक बात की, फिर घड़ी देखी। बोली आप लोग चाय पिए। मेरा स्कूल का वक्त हो गया। वे चप्पल फटकारती सीढी से उतर गई।

शेखावाटी मिशन–100

Sponsored by ALLEN, Sikar (Raj.)

प्रश्न 25 निम्न लिखित पद्यांशो में से किसी एक पंद्याश की सप्रंसग व्याख्या कीजिए :—

शान्ति नहीं तब तक, जब तक
सुख—भाग न नर का सम हो,
नहीं किसी को बहुत अधिक हो,
नहीं किसी को कम हो।
ऐसी शान्ति राज्य करती है
तन पर नहीं, हृदय पर
नर के ऊँचे विश्वासों पर,
श्रद्वा भक्ति, प्रणय पर।

अथवा

नाथ दीनदयाल रघुनाई। बाघउ सनमुख गएँ न खाई
चाहिअ करन सो सब करि बीते। तुम्ह सुर असुर चराचर जीते।।
संत कहहि असि नीति दसानन। चौथेंपन जाइहि नृप कानन।।
तासु भजन कीजिअ तहँ भर्ता। जो कर्ता पालक संहर्ता।।

खण्ड—ई

प्रश्न संख्या 26 से 28 तक प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों मे दीजिए —

निबंधात्मक प्रश्न 6×2=12

प्रश्न 26 ''पद और प्रतिष्ठा मनुष्य और मनुष्य के बीच के नैसर्गिक सम्बंध को समाप्त कर देते है। ''गुल्ली डंडा कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

''पाजेब कहानी में बाल—मनोविज्ञान का सजीव परिचय मिलता है'', इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

अथवा

नेत्रहीन अलोपी न प्रकृति के रौद्र रूप से भयभीत होता था न उसके सौन्दर्य बहकता था। प्रत्येक स्थिति में दृढ़ता व धैर्य से काम में संलग्न अलोपी का चरित्र —चित्रण कीजिए।

प्रश्न 27 ''रहीम के काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम और श्रृंगार का सुन्दर समावेश है''। कथन की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

अथवा

मैथिली शरण गुप्त भारतीय सांस्कृतिक नव जागरण के कवि है'' कथन की औचित्यता सिद्ध कीजिए।

अथवा

''राम की शक्ति पूजा'' मानव मन का अन्तर्द्वन्द्व है। समझाइए ?

प्रश्न 28 वर्तमान संदर्भो में 'निर्वासित' कहानी की प्रासंगिकता सिद्ध कीजिए।

अथवा

भारत में सदा ही ऐसे लोग उत्पन्न होते आये है जिन्होंने समय के तात्कालिक और मोहक पुरस्कार को ठुकराकर जीवन के सर्वोच्च अभीष्टों को पाने का प्रयास किया है'' कथन के संदर्भ में जगदीश चन्द्र बोस के जीवन का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

'भोर का तारा' एकांकी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

शेखावाटी मिशन—100

शेखावाटी मिशन –100 परीक्षा (2020–21)

उच्च माध्यमिक परीक्षा मॉडल प्रश्न –पत्र 2021

विषय –हिन्दी साहित्य

कक्षा – 12

समयः 3¼ घण्टे | पूर्णांक : 80

खण्ड–अ

दिए गए प्रश्नों के उत्तर का सही विकल्प चयन कर उत्तर पुस्तिका में लिखिए :–

बहुवैकल्पिक प्रश्न 1×10=10

1. भारतेन्दु युग की समय सीमा इनमें से क्या हैं ?
   (अ) 1918–1936 ई (ब) 1857–1900 ई. (स) 1900–1918 ई. (द) 1800–1850 ई.
2. किस कवि को राष्ट्रकवि की उपाधि मिली ?
   (अ) मैथिलीशरण गुप्त (ब) श्रीधर पाठक (स) प्रतापनारायण मिश्र (द) सोहन लाल द्विवेदी
3. छायावाद के चार स्तंभों में निम्नलिखित में से कौन सा एक नहीं है ?
   (अ) सुमित्रानंदन पंत. (ब) महावीर प्रसाद द्विवेदी (स) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (द) जयशंकर प्रसाद
4. ''तार सप्तक'' का संपादन किसने किया ?
   (अ) निराला (ब) हरिऔध (स) अज्ञेय (द) नागार्जुन
5. ''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती,
   स्वयं प्रभा समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती।''
   प्रस्तुत पंक्तियों में कौनसा काव्य गुण है ?
   (अ) ओज (ब) माधुर्य (स) प्रसाद (द) आवेश
6. ''रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो छिटकाय।
   टूटे से फिरि ना जुरै, जुरै गाँठ परिजाय।।''
   उपर्युक्त दोहे में कौनसा काव्य गुण है ?
   (अ) माधुर्य (ब) ओज (स) प्रसाद (द) अद्‌भुत
7. ''रोला और उल्लाला'' के मेल से .... छंद बनता है ?
   (अ) सवैया (ब) कुण्डलिया (स) छप्पय (द) हरिगीतिका
8. निम्नलिखित में से कौनसा वर्णिक छंद है ?
   (अ) हरिगीतिका (ब) छप्पय (स) कुण्डलिया (द) सवैया
9. जब कवि अप्रस्तुत का वर्णन करके प्रस्तुत का बोध कराता है, तब .... अलंकार होता है ?
   (अ) व्यतिरेक (ब) समासोक्ति (स) अन्योक्ति (द) विशेषोक्ति अलंकार
10. निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय।
    बिन पानी साबुन बिना निर्मल करै सुभाय।।
    प्रस्तुत दोहे में कौनसा अलंकार है ?
    (अ) प्रतीप अलंकार (ब) विभावना अलंकार (स) व्यतिरेक अलंकार (द) अन्योक्ति अलंकार

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न संख्या 2 से 11 तक प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति मे दीजिए– 1×10=10

अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

2. ओज गुण की परिभाषा लिखिए।
3. हरिगीतिका छंद का एक लक्षण लिखिए।
4. ''व्यतिरेक'' अलंकार से क्या अभिप्राय है ?
5. ''पेशोला की प्रतिध्वनि'' कविता जयशंकर प्रसाद के किस काव्य संग्रह में संकलित है ? नाम लिखिए।
6. ''देश में एक बूढ़ा था'' शिरीष के फूल निबन्ध में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने किस ओर संकेत किया है ?
7. पृथ्वी वसुंधरा क्यों कहलाती है ?
8. सर जगदीश चन्द्र बोस ने हमारी राष्ट्रीय संस्कृति का सार क्या बतलाया ?

रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हुए उत्तर दीजिए –

9. जिस काव्य को पढ़कर अथवा सुनकर मन में जोश, उत्साह का संचार हो वहां .... गुण होता है।
10. जिस पद में विशेषणों का प्रयोग करते हुए प्रस्तुत और अप्रस्तुत का एक साथ बोध हो वहां ....अलंकार होता है।
11. उपमा अलंकार का ठीक उल्टा .... अलंकार होता है।

खण्ड–ब

लघूत्तरात्मक प्रश्न (प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।) शब्द सीमा – 30 शब्द 2×8=16

12. ''हुआ सहसा स्थिर मन चंचल'' राम का मन अचानक अस्थिर क्यों हो उठा ?
13. ''भारत माता'' कविता में पंत जी ने भारत माता की किस दशा का चित्रण किया है ? लिखिए।
14. चिलकती धूप में भी सरस बने रहने वाला शिरीष हमें क्या प्रेरणा देता है ? समझाइये।
15. लेखक ने राष्ट्रीयता की कुंजी किसे माना और क्यों ? राष्ट्र का स्वरूप पाठ के आधार पर वर्णन कीजिए।
16. जगदीश चंद्र बोस ने क्रिस्कोग्राफ की क्या विशेषता बताई है ? लिखिए।
17. हैदर जैसे गुंडे का हृदय परिवर्तन किस कारण हुआ ? उस घटना का उल्लेख कीजिए।
18. ''निकट काल जेहि आवत साई, तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाई।। निम्नलिखित पंक्ति का भावार्थ लिखिए।
19. गेहूँ और गुलाब का संबंध किनसे है ? इन देशों का मानव जीवन में उपयोगिता को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड–स

लघूत्तरात्मक प्रश्न (प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का है) शब्द सीमा – 60 शब्द 4×4=16

20. द्विवेदी युग को ''जागरण सुधार काल'' क्यों कहा गया हैं ?

अथवा

नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

21. ''भारतेन्दु युग के प्रमुख कवि एवं उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए।

अथवा

''नाटक'' एवं ''एकांकी'' विधा की परिभाषा एवं अन्तर स्पष्ट कीजिए।

22. छायावाद की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

रेखाचित्र एवं संस्मरण विधा में अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

23. ''अन्योक्ति अलंकार'' को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अथवा

''अन्योक्ति एवं समसोक्ति'' अलंकार में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

शेखावाटी मिशन–100

खण्ड–द

लघूत्तरात्मक प्रश्न (शब्द सीमा – 80 शब्द) 5×2=10

24. निम्नलिखित गद्यांशो में से किसी एक गद्यांश की सप्रंसग व्याख्या कीजिए–

वैशाख नए गायक के समान अपनी अग्निवीणा पर एक से एक लम्बा आलाप लेकर संसार को विस्मित कर देना चाहता था। मेरा छोटा घर गर्मी की दृष्टि से कुम्हार का देहाती आवाँ बन रहा था और हवा से खुलते, बंद होते खिड़की–दरवाजों के कोलाहल के कारण आधुनिक कारखाने की भ्रांति उत्पन्न करता था। मैं इस मुखर ज्वाला के उपयुक्त ही काम कर रही थी अर्थात् उत्तर–पुस्तिकाओं में अंधाधुंध भरे ज्ञान–अज्ञान की राशि को विवेक में तपा–तपाकर ज्ञान–कणों का मूल्य निश्चित कर रही थी।

अथवा

अर्थशास्त्र संस्कारों के सीने पर चढ़कर गला दबा रहे है इधर एक लड़के ने लड़की को उसी की इच्छा से भगाकर ''सरकारी शादी'' कर ली । लड़का सुंदर, योग्य नौकरी वाला। पहले लड़की की माँ के संस्कारों ने जोर मारा और उसने हाय–तौबा मचाया। अर्थशास्त्र को यह बर्दाशत नहीं हुआ उसने संस्कारों को पटखनी दी । माँ ने सोचा यह जो दहेज के लिए 15 हजार रखे थे। साफ बचे ! फरि 15 हजार में इतना अच्छा लड़का भी नहीं मिलता । उन्होने कार्ड बांट कर दावत दे दी।

25. निम्नलिखित पद्यांशो में से किसी एक पद्यांश की सप्रंसग व्याख्या कीजिए–

न्याय शान्ति का प्रथम न्यास है,
जब तक न्याय न आता,
जैसा भी हो, महल शान्ति का
सुदृढ़ नहीं रह पाता।
कृत्रिम श्शान्ति सशंक आप
अपने से ही डरती है,
खड्ग छोड़ विश्वास किसी का
कभी नहीं करती है।

अथवा

अंहकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित महान ।
मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान ।
अस विचारी सुनु प्रानपति प्रभु सन बयरू विहाइ।
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ

खण्ड–य

निबन्धात्मक प्रश्न (शब्द सीमा – 80 शब्द) 6×3=18

26. मैथिलीशरण गुप्त के द्वारा भारत की श्रेष्ठता कविता में अभिव्यक्त भावों को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

अथवा

पैसे एवं सेम की बिजाई के माध्यम से कवि कविता में क्या संदेश देना चाहता है ?

अथवा

कबीर के दोहों के आधार पर गुरू का महत्व अपने शब्दों मे स्पष्ट कीजिए।

27. ''पाजेब'' कहानी में बाल मनोविज्ञान का सजीव परिचय मिलता है। इस कथन पर प्रकाश डालिए।

अथवा

''मिठाईवाला'' कहानी की मूल संवेदना क्या है ? कहानी के आधार पर वर्णन कीजिए।

अथवा

'गुल्ली–डंडा कहानी का केन्द्रीय भाव क्या है ? स्पष्ट कीजिए।

28. वर्तमान सन्दर्भों में ''निर्वासित'' कहानी की प्रासंगिकता सिद्ध कीजिए।

अथवा

वास्तव में शेखर ने कवि कर्म का निर्वाह किया। आप इस कथन से कहाँ तक सहमत है ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

अथवा

राष्ट्रीय एकता पर सुभाष बाबू के विचार लिखिएं।

शेखावाटी मिशन–100

ALLEN® CAREER INSTITUTE KOTA (RAJASTHAN)
path to success
SIKAR, RAJASTHAN

सपने होंगे सच

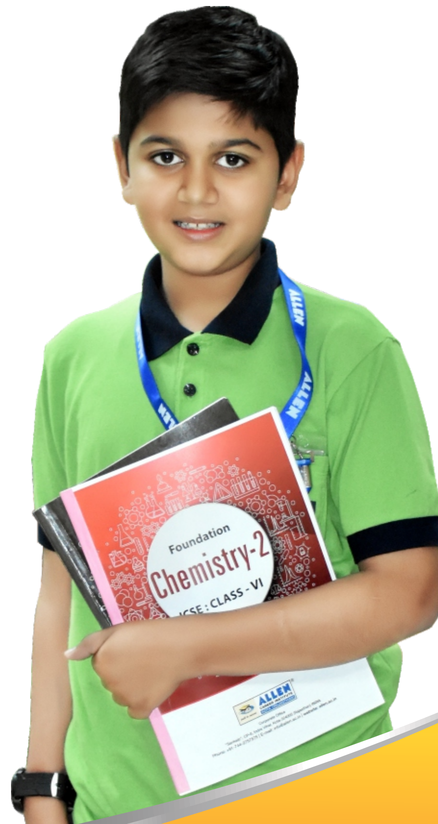

Pre-Nurture & Career Foundation Division

Class 6th to 10th | NTSE | OLYMPIADS & BOARD

Admission Open

Session 2021-22

New Batches for

Class 6th to 10th

7 April & 12 May 2021

(*ENGLISH MEDIUM*)

Strong Foundation Leads to

EXTRAORDINARY RESULTS

ALLEN SIKAR
Classroom Students
Qualified for

INMO
Indian National Mathematical Olympiad
&
INJSO
Indian National Junior Science Olympiad
(Conducted by HBCSE)

KRISH GUPTA
Class: 10th

DINESH BENIWAL
Class: 10th

HIMANSHU THALOR
Class: 9th

ALLEN® SIKAR Result : JEE (Adv.) 2020

प्रथम वर्ष में ही JEE (Adv.) का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

AIR **736**

AIR **836**

SUBHASH
Classroom Student

KULDEEP SINGH CHOUHAN
Classroom Student

ALLEN® SIKAR Result : JEE (Main) 2021 (Feb. Attempt)

दो साल बेमिसाल

एलन सीकर ने गढ़े कीर्तिमान,
जेईई–मेन में दिए
शेखावाटी टॉपर्स

MATHEMATICS 100 PERCENTILE

शेखावाटी टॉपर

शेखावाटी गर्ल्स टॉपर

ROHIT KUMAR
Classroom
99.9892474 %tile

SAKSHI GUPTA
Classroom
99.8925637 %tile

ALLEN® SIKAR Result : NEET (UG) 2020

प्रथम वर्ष में एलन सीकर, क्लासरूम के 165 + विद्यार्थियों को मिला सरकारी मेडिकल कॉलेज में प्रवेश

680/720
AIR 695
AIIMS Jodhpur

675/720
AIR 866
AIIMS Jodhpur

LAVPREET KAUR GILL
Classroom Student

AYUSH SHARMA
Classroom Student

Lady Hardinge Medical College, Delhi

SARVANISHTHA

All India Institute Of Medical Sciences, Jodhpur

RAHUL BHINCHAR

Swai Man Singh Medical College, Jaipur

JITENDRA P.S. RATHORE

Swai Man Singh Medical College, Jaipur

AYUSH CHOUDHARY

Sardar Patel Medical College, Bikaner

RAVEENA CHOUDHARY

Swai Man Singh Medical College, Jaipur

AAKANKSHA CHAUDHARY

Swai Man Singh Medical College, Jaipur

RAMPRATAP CHOUDHARY

Swai Man Singh Medical College, Jaipur

PRACHI RAJPUROHIT

Sardar Patel Medical College, Bikaner

NIKITA

Sardar Patel Medical College, Bikaner

DAYANAND JYANI

Sardar Patel Medical College, Bikaner

ANNU

Swai Man Singh Medical College, Jaipur

DEEPIKA GOENKA

Rajasthan University Of Health Sciences, Jaipur

OM PRAKASH JAT

Sardar Patel Medical College, Bikaner

PRAVEEN KUMAR YADAV

Sardar Patel Medical College, Bikaner

ADITI

Sardar Patel Medical College, Bikaner

MANASVI JANGIR

All India Institute Of Medical Sciences, Nagpur

SANJAY SAIN

All India Institute Of Medical Sciences, Raebareli

SUMIT CHOUDHARY

Dr. Sampurnanand Medical College, Jodhpur

ANKIT

Sardar Patel Medical College, Bikaner

HEMANT DHAYAL

UPCOMING NEW BATCHES for JEE (Main+Adv.) & NEET (UG)

(Hindi & English Medium)

NURTURE BATCH	ENTHUSIAST BATCH	LEADER BATCH
(For Class 10th to 11th Moving Students)	(For Class 11th to 12th Moving Students)	(For Class 12th Appeared / Pass Students)
Starting from	Starting from	Starting from
2, 9, 16 June & 30 June 2021	**7 April 2021** Both 11th & 12th syllabus will be covered	**2 June & 16 June 2021**

ALLEN® SIKAR

TEAM **ALLEN** @ SIKAR

एलन स्कॉलरशिप एडमिशन टेस्ट
(ASAT)

04, 11, 25 अप्रैल 2021 | 09, 23, 30 मई 2021,
06, 13, 20, 27 जून 2021

90% तक स्कॉलरशिप

ALLEN® CAREER INSTITUTE KOTA (RAJASTHAN)
path to success

DOWNLOAD **FREE** SAMPLE PAPERS

ALLEN Sikar Center: "SANSKAR," Near Piprali Circle,
Sikar-Jhunjhunu Bypass, Piprali Road, Samrathpura, Sikar
Tel.: 01572-262400 | **E-mail** : sikar@allen.ac.in

Corporate Office : "SANKALP", CP-6, Indra Vihar, Kota (Raj.) INDIA, 324005
Tel.: 0744-2757575 | **Email**: info@allen.ac.in | **Web**: www.allen.ac.in

ALLEN Info & Admission App
Download from Google play

www.allen.ac.in/sikar | facebook.com/allensikar | twitter.com/allensikar | youtube.com/allencareerinstitute